हमारे डिजीटल प्लेटफार्म
www.scgnews.in
scgnews Social Channel Group
YouTube

लाईफ वर्सिटी

RNI NO. CHHHIN/2023/87466

जब अकेले होते हैं तो आध्यात्मिक बन जाते हैं और जब समूह में होते हैं तो धार्मिक बन जाते हैं

वर्ष : 2 | अंक : 05 | माह : अक्टूबर 2024 | पृष्ठ : 8 | संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, 8817194979 | मूल्य : 5 रू.

भाजपा ने सुनील सोनी को बनाया प्रत्याशी,
प्रमोद ने खरीदा नामांकन,असमंजस में कांग्रेस

रायपुर। भाजपा विधायक एवं पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल के सांसद चुने जाने के बाद खाली हुई रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव के लिए बीजेपी ने प्रत्याशी घोषित कर पूर्व सांसद सुनील सोनी को प्रत्याशी बनाया है। इधर, शनिवार को कांग्रेस नेता प्रमोद दुबे ने भी नामांकन फॉर्म ले लिया है। हालांकि कांग्रेस ने अब तक नाम की घोषणा नहीं की है। एसे मे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व महापौर प्रमोद दुबे ने नामांकन फार्म खरीदकर सबको चौंका दिया है। इस पर डिप्टी ष्टरूअरुण साव ने टिप्पणी करते हुए कहा कि, कांग्रेस के झगड़े दिखाई दे रहे हैं। वहीं, दीपक बैज इस मामले में प्रतिक्रिया देने से बचते दिखे। बता दे इस विधानसभा सीट पर 13 नवंबर को उपचुनाव होने हैं।

बृजमोहन अग्रवाल के करीबी और बेहद विश्वसनीय सुनील सोनी छात्र राजनीति मे दुर्गा महाविद्यालय रायपुर के अध्यक्ष रहे। नगर निगम रायपुर मे पार्षद ,सभापति और महापौर रहे । आरडीए अध्यक्ष और प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी संभालने वाले सुनील सोनी को 2019 मे रायपुर लोकसभा के सांसद निर्वाचित हुए ।

जिला प्रशासन के मुताबिक, रायपुर दक्षिण विधानसभा उप चुनाव के लिए 18 अक्टूबर को पहले दिन ही 8 नामांकन आवेदन खरीदे गए। इनमें लोकजन शक्ति पार्टी जनशक्ति सभा छत्तीसगढ़ प्रदेश से अभ्यर्थी जया राव, सुंदर समाज पार्टी से अभ्यर्थी रामकुमार अजगल्ले, निर्दलीय अभ्यर्थी राधेश्वर गायकवाड़, राइट टू रिकॉल पार्टी से अभ्यर्थी चंपालाल। निर्दलीय आशीष पांडे, धूं-सेना से अभ्यर्थी नीरज सैनी, समाजवादी पार्टी से मनीष श्रीवास्तव, इंडियन नेशनल कांग्रेस से प्रमोद दुबे ने नामांकन आवेदन खरीदा है। नामांकन आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 25 अक्टूबर है। 30 अक्टूबर को उम्मीदवारी वापस ली जा सकेगी। 2008 के परिसीमन के बाद अस्तित्व मे आई इस सीट पर बृजमोहन अग्रवाल लगातार बड़े अंतर से चुनाव जीतते आए है । साल 2018 के चुनाव में कांग्रेस के कन्हैया अग्रवाल सबसे कम वोटों से हारने वाले प्रत्याशी थे। इस चुनाव में बृजमोहन की लीड महज 17496 थी। विश्लेषक बतलाते है कि राज्य बनने के बाद चौथे चुनाव में भाजपा को एंटी इनकंबेंसी की सामना करना पड़ा था। फिर भी बृजमोहन किसी तरह रायपुर की यह सीट बचाने में कामयाब हो पाए थे। इसके बाद 2023 के चुनाव में बृजमोहन ने कांग्रेस के डॉ. महंत रामसुंदर दास को सबसे ज्यादा 67 हजार से अधिक वोटों से हराया।

प्रधानमंत्री मोदी ने किया मां महामाया एयरपोर्ट दरिमा का वर्चुअल उद्घाटन

सरगुजा। छत्तीसगढ़ के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र सरगुजा अब हवाई सेवा से जुड़ गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को वाराणसी से मां महामाया एयरपोर्ट दरिमा का वर्चुअल रुप से लोकार्पण किया। अंबिकापुर में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और राज्यपाल रमेन डेका सहित मंत्रिमंडल के अनेक सदस्य शामिल हुए।

80 करोड़ की लागत से बनकर तैयार हुआ मां महामाया एयरपोर्ट

मां महामाया एयरपोर्ट, अंबिकापुर में लगभग 80 करोड़ की लागत से कार्य किए गए हैं। दरिमा हवाई पट्टी का निर्माण वर्ष 1950 में हुआ था, इसे प्रारंभिक दौर में डब्ल्यूबीएम सतह से निर्मित किया गया था, जिसकी लंबाई 1200 मीटर थी। यह हवाई पट्टी अम्बिकापुर शहर से 13 किमी की दूरी पर दरिमा ग्राम में निर्मित है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल 365 एकड़ है और यह हवाई पटटी समुद्र तल से 1924 फीट ऊंचाई में स्थित है।

हवाई अड्डे के विकास के लिए 46.27 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति लोक निर्माण विभाग को जारी की गई, जिसके तहत लोक निर्माण विभाग के ने दिसंबर 2021 से उन्नयन कार्य तीन सीव्हीएफआर के अनुरूप शुरू किया। लोक निर्माण विभाग की ओर से अप्रैल 2023 को कार्य को पूर्ण कराकर लाइसेंस के लिए आवेदन किया गया, जिसके तहत डीजीसीए ने मई 2023 को निरीक्षण किया। निरीक्षण के बाद पूर्ण औपचारिकताओं को पूर्ण करते हुए डीजीसीए ने 15 मार्च 2024 को एरोड्रम लाईसेंस जारी किया। रनवे को लम्बाई 1500 मीटर से बढ़ाकर 1800 मीटर किया गया।

रनवे की लम्बाई 1500 मीटर से बढ़ाकर 1800 मीटर किया गया। रनवे के मजबूतीकरण के लिए पीसीएन को बढ़ाकर 25 किया गया जिसे एटीआर 72 के अनुरूप किया गया। नये एपरोन को 110×127 मीटर का बनाया गया, जो कि एक साथ दो एटीआर 72 हवाई जहाज को खड़ा करने के लिए उपयुक्त है। इसके साथ आईसोलेशन वे, दोनों तरफ आरईएसए एवं 25×150 मीटर के दो टैक्सी-वे का निर्माण किया गया है। इसके साथ ही पैरीमीटर रोड एवं अन्य एप्रोच रोड का डामरीकरण कार्य कराया गया। पूर्ण क्षेत्रफल लगभग 8 कि.मी. की लम्बाई में बाउण्ड्रीवाल की ऊंचाई 1.5 मीटर से बढ़ाकर 3.2 मीटर की गई। सारे आंतरिक मार्गों का डामरीकरण एवं रोड फर्नीचरिंग एवं मार्किंग का कार्य कराया गया।

छत्तीसगढ़ राज्य 108 पदक जीत कर पहले स्थान पर
27वीं अखिल भारतीय वन खेलकूद के महाकुंभ

रायपुर। छत्तीसगढ़ में चल रहे 27वीं अखिल भारतीय वन खेलकूद प्रतियोगिता का समापन समारोह 20 अक्टूबर को स्वामी विवेकानंद स्टेडियम, कोटा, रायपुर में किया जा रहा है। इस वन खेलकूद प्रतियोगिता में विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ राज्य वन विभाग ने सबसे अधिक पदक प्राप्त कर अपना प्रथम स्थान पर बने रहे। रिपोर्ट लिखे जाने तक छत्तीसगढ़ 57 गोल्ड, 28 सिल्वर, 23 कांस्य पदक लेकर कुल 108 पदक और 435 पॉइंट के साथ शीर्ष पर बना हुआ है। वहीं पदक तालिका में दूसरे और तीसरे स्थान पर क्रमश: केरल और मध्यप्रदेश की टीम ने अपना स्थान बनाया हुआ है।

गौरतलब है कि इस प्रतियोगिता में 29 राज्य, 08 केन्द्र शासित प्रदेश, 06 वानिकी संस्थानों एवं पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधिकारी-कर्मचारियों के लगभग 3000 खिलाड़ियों जिसमें लगभग 584 महिला एवं 2320 पुरूष खिलाड़ी भाग लिया था। प्रतिभागियों के बीच 23 खेलों की 300 विधाओं जैसे एथलेटिक्स, बैडमिंटन, लॉन टेनिस, वेटलिफटिंग, कैरम, स्वीमिंग, तीरंदाजी, कबड्डी, क्रिकेट, फुटबॉल, बॉलीबाल जैसे खेलों के व्यक्तिगत एवं समूह खेलों का आयोजन किया गया। देशभर से आए वन विभाग के प्रतिभागियों के बीच प्रतिस्पर्धा हुआ। प्रतिस्पर्धा प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा अपने प्रतिद्वंदी को कड़ी चुनौती दी गई। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को क्रमश: स्वर्ण, रजत एवं कांस्य के कुल 1200 पदक प्रदाय किए जाएंगे।

27वीं अखिल भारतीय वन खेलकूद प्रतियोगिता खिलाड़ियों द्वारा अपने खेल कौशल को निखारे तथा विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और भावनाओं के प्रति भी एक-दूसरे का सम्मान किये। यह आयोजन न केवल प्रतिस्पर्धा का पर्व रहा, बल्कि भाईचारे, मेहनत और सामूहिक एकता का उत्सव भी दिखा।

विकसित भारत बनने की राह में 'कुपोषण' आज भी एक चुनौती

नरेंद्र पाण्डेय

दुनिया की 'वैश्विक भूख सूचकांक' (जीएचआई) की नवीनतम रिपोर्ट आई है. जिसमें भारत को 127 देशों में 105 वां स्थान मिला है . यह आंकड़ा देश के सामने खड़ी एक बड़ी चुनौती को उजागर कर रहा है. आज भी देश में कुपोषण एक भीषण समस्या है विशेषकर ग्रामीण अंचलो मे इसे महसूस किया जा सकता हैं.

जो हमारे देश के करोड़ों नागरिकों के स्वास्थ्य और जीवन को प्रभावित तो कर ही रही है, साथ ही यह हमारे देश के विकास और भविष्य के लिए भी एक संकट के बादल की तरह है.

आंकड़े बतलाते हैं कि देश में 13.7 फीसद जनसंख्या कुपोषित है, 35.5 फीसद बच्चे अविकसित हैं, और 2.9 फीसद बच्चे पैदाइश के 5 साल के अंदर मर जाते हैं. ये आंकड़े इंगित करते हैं कि शासन-प्रशासन नागरिकों को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने में कितना असफल है. ऐसे में आवश्यकता है हमे अपने किसानों के प्रति जवाबदेह होने का , हमें अपने कृषि क्षेत्र को मजबूत करने की आवश्यकता है, ताकि हम अपने नागरिकों को पर्याप्त मात्रा में भोजन प्रदान करा सकें. दूसरा, हमें अपने सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुधारने की आवश्यकता है, ताकि गरीब और वंचित वर्गों तक भोजन पहुंच सकें. तीसरा, हमें अपने स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने की आवश्यकता है, ताकि हम कुपोषण और भूख से संबंधित बीमारियों का इलाज कर सकें.

आज नरेंद्र मोदी सरकार को इस समस्या का समाधान करने के लिए ठोस कदम उठाने के लिए प्रतिबद्ध होना होगा. मोदी सरकार को नीतियों और कार्यक्रमों को इस तरह से बनाने की आवश्यकता है कि भूख और कुपोषण खत्म हो. इस के अलावा, हमें अपने समाज में जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है. नागरिकों को यह समझाने की आवश्यकता है कि भूख और कुपोषण एक विकट समस्या है और इस का समाधान करने के लिए सभी को एकजुट हो कर के एक दिशा में काम करना होगा. समयबद्ध तरीके से काम करना होगा तभी हम कुपोषण और भूख से जीत सकते हैं.

हमें अपने शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने की आवश्यकता है, ताकि हम अपने नौनिहालों को पोषण और स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित कर सकें. सरकार को महिलाओं को सशक्त बनाने की दरकार है, ताकि वे अपने परिवार के लिए बेहतर निर्णय ले सकें. लेकिन इस दिशा में सरकार अब तक उदासीन ही रहती आई है. भूख और कुपोषण की समस्या का समाधान करने के लिए हमें अपने समाज में, लोकतांत्रिक व्यवस्था में बदलाव लाने की आवश्यकता है. हमें देश में जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है, ताकि लोग इस समस्या के प्रति जागरूक हो सके और इस का समाधान करने में मदद कर सके. भूख और कुपोषण की समस्या का समाधान करने के लिए राज्य सरकारों और सामाजिक संस्थाओं को मिल कर काम करने की आवश्यकता है. इन कदमों से हम भूख और कुपोषण की समस्या को कम कर सकते हैं और देश के विकास में योगदान कर सकते हैं.

दरअसल सरकार की दाएं बाएं देखने की फितरत के कारण इस बुनियादी समस्या की ओर न तो ध्यान दिया जा रहा है और न ही इसे खत्म करने का गंभीर प्रयास दिखाई देते हैं जिस की बड़ी आवश्यकता है.

लाइफस्टाइल में सिर्फ स्टाइल है, लाइफ नहीं- डॉ अनिल गुप्ता

और एक ऐसी दुनिया जहाँ दिखावा ज़्यादा मायने रखता है, ने हमें स्टाइल के पीछे भागने वाले जाल में फंसा दिया है। इसलिए कहा जाता है, 'आज की लाइफस्टाइल में सिर्फ़ स्टाइल है, लाइफ नहीं।' हम इस कदर भाग रहे हैं, भविष्य की चिंता में डूबे हैं, और अपने आप को अस्वास्थ्यकर आदतों—चाहे वह भोजन हो या भावनाएँ—से भर रहे हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि स्ट्रेस , चिंता , डिप्रेशन , और बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं।

आज की लाइफस्टाइल को तीन शब्दों में समझा जा सकता है- **Hurry, Worry, Curry।**

हम ज़िन्दगी में बस भाग रहे है , तेज़ी से भाग रहे हैं, भविष्य की चिंता में फंसे हुए , अपने शरीर को अनहेल्दी भोजन और आदतों से भर रहे हैं। इस जल्दबाज़ी ने हमें हमारी आंतरिक शांति से दूर कर दिया है और हमारा शरीर और मन दोनों ही कमज़ोर हो गए हैं। हमने मीनिंगफुल ह्यूमन कनेक्शन्स को सुपरफिशियल सोशल मीडिया इंटरैक्शन्स से बदल दिया है। हमारे पारस्परिक संबंद अब महज दिखावा रह गए है । सुविधा के लिए भागते हुए, हमने संतुलित और समग्र जीवन जीने की असलियत को भुला दिया है।

टेक्नोलॉजी का आविष्कार जीवन को आसान बनाने के लिया किया गया था लेकिन यही टेक्नोलॉजी हमे आलसी बना रही है । आज हम अधिकतर समय स्क्रीन से चिपके रहते हैं, फलत: आलसी और निष्क्रिय हो गए हैं। अधिक विकल्पों और अत्यधिक जानकारी के बोझ ने हमें मानसिक रूप से थका दिया है। इसका नतीजा यह हुआ है कि हम मानसिक रूप से थके हुए, भावनात्मक रूप से अस्थिर, और शारीरिक रूप से प्रकृति से कटे हुए हैं।

समाधान के लिए प्रैक्टिकल होलीस्टिक लिविंग अपनाने की आवश्यकता है । होलीस्टिक लिविंग अर्थात समग्र जीवन । आज के हाइपर-डिजिटल वर्ल्ड में यह एक ज़रूरत बन गया है। जो शरीर, मन, और आत्मा के सभी पहलुओं में संतुलन (बैलेंस) बनाए रखे । व्यावहारिक समग्र जीवन जीने के लिए, हमें उन चीजों से जुड़ना होगा जो वास्तव में मायने रखती हैं। आज की तेज़-रफ़्तार दुनिया में होलीस्टिक लिविंग लाईफ जीने के लिए कुछ प्रैक्टिकल स्टेप्स है जो इस कदम में आपकी मदद करेंगे-

शोर भरी दुनिया में, मौन ही सबसे बड़ी क्रांति है

हम अक्सर उथली सांसें लेते हैं, जो एंग्जायटी और स्ट्रेस को बढ़ा सकती हैं। प्रतिदिन सिर्फ़ 5 मिनट की गहरी, माइंडफुल ब्रीथिंग या मैडिटेशन करने से कोर्टसोल लेवल्स जिसे तनाव वाला हार्मोन भी कहा जाता है , कम होते हैं, मानसिक स्पष्टता में सुधार होता है और मन को शांति मिलती है। ध्यान आपको जीवन की भागदौड़ में थोड़ी देर के लिए रुकने और वर्तमान क्षण में केंद्रित होने का अवसर देता है।

भोजन ही आपकी दवा हो, दवा को भोजन न बनाए

जो हम खाते हैं उसका सीधा असर हमारे मानसिक, भावनात्मक, और शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। प्रोसेस्ड फास्ट फूड की बजाय पौष्टिक, व्होले फूड्स (सम्पूर्ण खाद्य पदार्थ) पर ध्यान दें। एक रंग-बिरंगा, प्लांट-बेस्ड डाइट (पौधे आधारित आहार) न सिर्फ़ आपके शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है, बल्कि आपकी वाइब्रेशनल एनर्जी (कंपनात्मक ऊर्जा) को भी बढ़ाता है। यह एक सरल पर गहरा कदम है जो आपको प्रकृति से जोड़ता है और अधिक संतुलित महसूस कराता है।

सादगीपूर्ण जीवन जिए

लियोनार्डो दा विंची ने कहा था सादगी ही परम परिष्कार है। आज आप और हम एक ऐसी दुनिया में हैं , जहाँ ओवरलोडेड ओपिनियनस (अत्यधिक राय) और एक्सेस ऑप्शयंस (अधिक विकल्प) ने हमें घेरे हुए हैं, सादगी ही शांति की कुंजी है। अपने भौतिक स्थान के साथ-साथ अपने मन को भी डिक्लटर (अव्यवस्थित) करें। जो चीजें वास्तव में आपके लिए मायने रखती हैं, उन पर ध्यान केंद्रित करें और जो आपके उच्चतम हित में नहीं हैं, उन्हें छोड़ दें। सरलता तनाव, चिंता, और घबराहट की भावनाओं को कम कर सकती है।

डिजिटल डेटॉक्स

टेक्नोलॉजी हमें जोड़ता है, लेकिन सच यह भी है कि यह हमें खुद से दूर भी करता है। स्क्रीन टाइम की सीमाएं तय करें, सोशल मीडिया से नियमित रूप से ब्रेक लें और प्रकृति में समय बिताएं। डिजिटल डेटॉक्स से आपके मस्तिष्क को आराम और पुन: ऊर्जा मिलती है।

फिजिकल एक्टिविटी को महत्व दें

हमारी निष्क्रिय जीवनशैली ने हमें हमारे शरीर से दूर कर दिया है। नियमित फिजिकल एक्टिविटी जैसे योग, चलना या कोई भी व्यायाम न सिर्फ़ आपके शरीर को मजबूत करता है, बल्कि मानसिक संतुलन भी बनाए रखता है। शारीरिक गतिविधि एंड्रार्फीन (खुशी हार्मोन) को बढ़ाती है और ऊर्जा को बढ़ाती है।

लीक से हटकर है छत्तीसगढ़ी फिल्म 'दस्तावेज'

छत्तीसगढ़ की फिल्मी दुनिया में पहली बार लीक से हटकर के कोई उसका नाम है दस्तावेज. यह फिल्म छत्तीसगढ़ी सिनेमा के दर्शकों के बीच उत्साह और उत्सुकता पैदा करने वाली इस फ़िल्म के साथ गुड लक फिल्म एंटरटेनमेंट भी छत्तीसगढ़ी फिल्म उद्योग में प्रवेश कर रहा है.

दस्तावेज फिल्म की अगर कहानी की बात करें तो यह ग्रामीण जीवन के संघर्ष प्रेम और सामाजिक समस्याओं पर आधारित है या फिर दर्शकों को छत्तीसगढ़ के गांव की संस्कृति और वहां के जीवन की झलक दिखाने के साथ-साथ भावनात्मक रूप से जोड़ती भी है।

फिल्म के प्रमोटर मंगल मूर्ति ने बताया कि इस फिल्म का निर्माण छत्तीसगढ़ की भूमि उसकी मिट्टी और वहां के लोगों को सच्चाई को ध्यान में रख कर दिया गया है फिल्म की कहानी प्रेम उत्साह अतिथि होली के साथ-साथ समाज की सच्चाइयों को भी चित्रण किया गया है जो दर्शकों को पूरे समय अपने सीट से बांधे रखेगी.

फिल्म की शूटिंग कांकेर जिले के नरहरपुर ब्लॉक के गांव में की गई है. फिल्म के लेखक निर्देशक सनी सिंह है जिन्होंने इस फिल्म की कहानी को एक भावनात्मक और संवेदनशील दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है सनी सिंह ने बताया कि दस्तावेज की कहानी में हर पत्र इस प्रकार गढ़ा गया है कि वह दर्शकों के दिलों में खास जगह बना लेता है उन्होंने यह भी कहा की फिल्म की कहानी सरल है लेकिन इसमें छिपी भावनाएं और संदेश इतने गहरे हैं कि वह हर कोई उनसे जुड़ाव महसूस करेगा।

सिंह का मानना है कि छत्तीसगढ़ी सिनेमा में अभी बहुत संभावना है और वह इस फिल्म के जरिए अप उद्योग में एक नए मापदंड स्थापित करना चाहते हैं.

4 साल की बच्ची से दुष्कर्म, कांग्रेस जांच कमेटी ने प्रशासन पर केस दबाने का लगाया आरोप

रायपुर। जब किसी भी महिला के साथ जब दुष्कर्म होता है तो वह अक्सर डरी हुई रहती है। कई बार तो उसे मानसिक और न्यूरो से संबंधित रोग भी हो जाते हैं. वह डिप्रेशन में चली जाती है, अगर लड़की अविवाहित होती है तो वो विवाह के बाद शारीरिक संबंध बनाने से डरती है. हमारे समाज में रेप को इस तरह से प्रचारित किया गया है कि लड़कियां इसे अपनी इज्जत लुट जाने से जोड़ती है और आजीवन इसकी त्रासदी को झेलती है, एक तरह के अपराधबोध को वे जीवन भर ढोती है. सबसे बुरी स्थिति छोटी बच्चियों की होती है जो रेप के वक्त यह समझ ही नहीं पातीं कि उनके साथ क्या हो रहा है और आजीवन उस घटना का दंश झेलती हैं. कई बार बच्चियां अपने घर में भी डरती हैं और एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में रहती हैं जो काफी डरा-सहमा होता है .ये बातें मैं आपसे इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि कुछ समय से देश सहित प्रदेश कई जिलों और क्षेत्रों से बच्चियों के साथ दुष्कर्म और यौन हिंसा के मामले बढ़ते जा रहें है.

हाल ही में छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के कुरुद क्षेत्र में चार साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म मामले में कांग्रेस ने बालोद विधायक संगीता सिन्हा की अध्यक्षता में गठित 6 सदस्यीय जांच कमेटी ने निजी अस्पताल में जाकर पीड़िता और उसके परिजनों से घटना के संबंध में जानकारी ली , इसके बाद विधायक संगीता सिन्हा ने स्वास्थ्य विभाग पर लापरवाही और प्रशासन पर मामला दबाने का आरोप लगाया है. विधायक संगीत ने हमसे बात करते हुए घटना धमतरी जिले के कुरुद की है जहाँ 18 सितंबर को एक 4 साल की बच्ची से रेप हुआ । परिजनों की रिपोर्ट पर नाबालिग को बाल संप्रेषण गृह भेजा गया। इधर मासूम बच्ची दर्द से कराहती रही। घटना के दूसरे दिन पीड़िता एक प्राइवेट अस्पताल गई, जहां उसे इलाज के लिए इनकार कर दिया गया. इसके कुरुद के अस्पताल में बच्ची का महज चेकअप कर दवाई देकर पीड़िता को घर भेज दिया. तबीयत बिगड़ने के बाद पीड़िता को धमतरी जिला अस्पताल लाया गया, लेकिन वहां बिना स्त्रङ्कक इलाज करने से इनकार कर दिया. जब परिजन एफआईआर दर्ज कराने थाने पहुंचे तो वहां पांच घंटे का इंतजार करने के बाद एफआईआर हुई । परिजन सप्ताह भर तक इलाज के लिए भटके। यह दुर्भाग्य है कि 4 दिनों तक बच्ची तक सोनोग्राफी तक नहीं हो सका। इससे व्यथित बच्ची की मां बेहोश हो गई, जिसे कुरुद सिविल अस्पताल में भर्ती किया गया है। इधर कलेक्टर नम्रता गांधी के हस्तक्षेप बाद गुरूवार को जिला अस्पताल में बच्ची का इलाज शुरू हुआ और सोनोग्राफी भी कराई गई।

पीड़िता का अभी रायपुर के निजी अस्पताल में इलाज जारी है, जहां स्थिति अभी भी खराब बनी हुई है. विधायक संगीता सिन्हा के अनुसार बच्ची के परिजनों ने उन्हे बातचीत में बताया कि स्थानीय विधायक अब तक पीड़िता से मिलने नहीं आए हैं. संगीता सिन्हा कहती है कि स्थानीय बीजेपी विधायक पीड़िता को न्याय दिलाने से ज़्यादा राजनीति करने में दिलचस्पी रखते हैं. कांग्रेस पीड़िता की आवाज उठा रही है. यदि समय पर स्थानीय विधायक ने मामले का संज्ञान लिया होता तो शायद पीड़िता की गंभीर हालत नहीं होती. उन्होंने प्रदेश की भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ को शांति का टापू माना जाता था, लेकिन अब प्रदेश यूपी-बिहार बनकर रह गया है . जांच कमिटी के सदस्यों ने सरकार से मांग की है कि बच्ची के स्वास्थ्य और पढ़ाई का पूरा जिम्मा उठाएं, पीड़िता को 50 लाख का मुआवजा दें. जिम्मेदार स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन पर कड़ी कार्रवाई की जाए और आरोपी को फांसी की सजा दी जाए.

भाजपा शासन मे महिलाये तो सुरक्षित थी ही नहीं अब तो बच्चियाँ भी सुरक्षित नहीं रही । वो तो स्कूल और ट्यूशन जाने मे भी डर रहीं है । जब से भाजपा की सरकार बनी है तब से राज्य मे चाकू बाजी ,बलात्कार जैसे की आपराधिक घटनाओ मे बढ़ोत्तरी हुई है । किसी भी घटना पर मुख्यमंत्री का बयान नहीं आता पता नहीं इसकी अनुमति का इंतजार करते है । संगीत ने बताया की बच्ची अभी भी दहसत मे है , सहमी हुई है वो अपने घर नहीं जाना चाहती जहाँ दुष्कर्म की घटना घटित हुई । वो अपनी नानी के घर जाने को कहती है । हो सकता है बच्ची के शरीर का घाव भर जाए , बच्ची शारीरिक रूप से पूर्णतयः ठीक भी हो जाए मगर उसके मन को जो पीड़ा हुई है उसका क्या ? उसके मानसिक ट्रामा का क्या ? वो जख्म कैसे भरेगा ? जिस तरह बच्ची भय और सदमे मे है उससे उसके भविष्य मे डिप्रेशन मे जाने का अंदेशा तो बना ही रहेगा । उसे मानो वैज्ञानिक की व्यवस्था कैसे हो पाएगी यह भी चिंता का विषय है ।

कचरे में पड़ी मिली भूपेश बघेल की तस्वीरें

दंतेवाड़ा। जिले से महिला बाल विकास विभाग की एक बड़ी लापरवाही सामने आई है. यहां बच्चों के लिए भेजी गई मूंगफली चिक्की विभाग के सरकारी गोदाम में ही सड़ गई. मालूम हो कि सरकार की 'सुपोषण अभियान' के तहत ये मूंगफली चिक्की 3 से 6 साल तक के बच्चों को पोषण के लिए बांटी जाती है. इसके हर पैकेट की कीमत 5 रुपये 85 पैसे होती है. लेकिन कुआकोंडा ब्लॉक में विभाग की अनदेखी और लापरवाही के चलते इस अहम योजना का लाभ नौनिहालों तक नहीं पहुंच सका. बताया जा रहा है कि ये मूंगफली की चिक्की 90 दिनों तक ही खाने लायक रहती है. उसके बाद ये एक्सपायर हो जाती है. ऐसे में ताज़ा मामले में हजारों पैकेटों को एक्सपायर होने के बाद जलाकर स्वाहा कर दिया गया. मामले में एक और हैरान करने वाली बात ये है कि गोदाम के बाहर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की भी कई तस्वीरें कचरे में पड़ी मिली.

बताते चले कि दंतेवाड़ा जिले के कुआकोंडा ब्लॉक में 150 से ज़्यादा आंगनबाड़ी केंद्र हैं जहां रोजाना सैकड़ों आदिवासी बच्चों को सुपोषण योजना के तहत मूंगफली चिक्की दी जानी थी. लेकिन मार्च महीने की आई चिक्की अक्टूबर तक नहीं बांटी गई.... और समय पर न बांटे जाने से हजारों चिक्कियां गोदाम में ही पड़े-पड़े सड़ गईं. इस लापरवाही का खामियाजा आदिवासी बच्चों को उठाना पड़ा जो इस योजना से वंचित रह गए. लापरवाही का ये मामला महिला बाल विकास विभाग की लापरवही को उजागर करता है. जहां सरकारी वादों का लाभ जरूरतमंदों तक नहीं पहुंच पाता और ये योजनाएं कागजों में ही सिमट कर रह जाती हैं. मामले में और भी चौंकाने वाली बात यह रही कि के बाहर छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और पूर्व महिला बाल विकास मंत्री अनिला भेड़ियाकी सैकड़ों तस्वीरें कूड़ेदान में पड़ी मिलीं.

ये तस्वीरें उस समय आंगनबाड़ी केंद्रों में बांटी जानी थीं लेकिन इन्हें भी लापरवाही के चलते नहीं बांटा गया. यह स्थिति दिखाती है कि जिन योजनाओं पर करोड़ों रुपये खर्च होते हैं... उन योजनाओं की जमीनी हकीकत क्या है ? ऐसे में इसका फायदा लोगों तक नहीं पहुंच पाता. गोदाम के अंदर का हाल तो और भी बुरा था. गर्भवती और शिशुवती माताओं के लिए भेजा गया रेडी टू ईट फूड और खेलने के भी सामान बेतरतीब ढंग से पड़े हुए थे. गोदाम में व्यवस्था पूरी तरह से बिखरी हुई नजर आई और कोई भी जिम्मेदार अधिकारी मौके पर मौजूद नहीं।

बिना विभागीय अनुमति के अब राजस्व अधिकारियों पर नहीं होगी एफआईआर

रायपुर। राजस्व अधिकारियों की मन की मुराद पूरी हो गई है. अब बिना विभागीय अनुमति के उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज नहीं होगी. छत्तीसगढ़ कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा संघ इस संबंध में लंबे समय से मांग करता रहा है, जिस पर कार्रवाई करते हुए राजस्व विभाग ने तमाम संभागायुक्तों और कलेक्टरों को पत्र जारी कर न्यायिक अधिकारी संरक्षण अधिनियम, 1850 और न्यायाधीश (संरक्षण) अधिनियम, 1985 के तहत राजस्व अधिकारियों को संरक्षण प्राप्त होने की बात कही है.

राजस्व विभाग के सचिव अविनाश चम्पावत की ओर से जारी पत्र में कहा गया है कि न्यायालयीन प्रकरणों के निराकरण उपरांत असंतुष्ट पक्षकारों द्वारा विधिवत अपील की कार्यवाही न कर सीधे पीठासीन अधिकारी के विरूद्ध पुलिस में शिकायत दर्ज कराई जा रही है, और पुलिस भी प्राथमिकी दर्ज कर पीठासीन अधिकारी को नोटिस दे रही है. इस प्रकार न्यायाधीश (संरक्षण) अधिनियम, 1985 के प्रावधानों के अंतर्गत राजस्व न्यायालय के पीठासीन अधिकारियों को संरक्षण प्राप्त नहीं हो पा रहा है.

इसके साथ असंतुष्ट पक्षकारों के पीठासीन अधिकारी के विरूद्ध सीधे सिविल न्यायालय में वाद दायर कर दिया जा रहा है, और सिविल न्यायाधीश स्पष्ट दिशा-निर्देशों के अभाव में पुलिस को प्राप्त शिकायत की जांच के लिए भेज रहे हैं, और पुलिस द्वारा प्राथमिकी दर्ज की जा रही है.

सचिव ने अधिनियमों का हवाला देते हुए बताया कि न्यायायिक अधिकारियों की सद्भावना में किए गए न्यायालय के कार्य अथवा पारित आदेशों के विरूद्ध सिविल न्यायालय में मुकदमा चलाए जाने के संबंध में संरक्षण प्राप्त है. इस अधिनियम के अंतर्गत कोई भी व्यक्ति जो न्यायालय के रूप में काम करता है, उसे उपरोक्तानुसार संरक्षण प्राप्त है. इस अधिनियम के अंतर्गत दिया गया संरक्षण इसी सिद्धांत पर दिया गया है कि जो व्यक्ति न्यायालय के रूप में कार्य करता है उसके कर्तव्यों के प्रभावी निष्पादन के लिए अत्यंत आवश्यक है कि वह व्यक्ति बिना किसी भय के कार्य कर सके.

संघ ने सचिव का जताया आभार

कनिष्क प्रशासनिक सेवा संघ के प्रदेश अध्यक्ष नीलमणि दुबे ने कहा कि हम विभागीय सचिव अविनाश चंपावत का आभार अभाव व्यक्त करते हैं कि उन्होंने हमारी पीड़ा को समझा है. हमने इस मांग को पिछले दिनों प्रमुखता से उठाया था.

महज 10 हजार रूपये में दोस्त ने बेचा ईमान, हत्यारों ने हत्या को आत्महत्या का रूप देने रची थी साजिश

लोहारीडीह हत्याकांड में बड़ा खुलासा

कवर्धा । लोहारीडीह हत्याकांड मामले में एक बड़ा अपडेट सामने आया है। मध्यप्रदेश की बालाघाट पुलिस ने खुलासा किया है कि शिवप्रसाद उर्फ कचरू साहू ने आत्महत्या नहीं की थी बल्कि उसकी हत्या कर घटना को आत्महत्या का रूप देने के लिए शव को फांसी के फंदे पर लटका दिया गया था। पुलिस ने कचरू साहू की हत्या के आरोप में 4 लोगों को गिरफ्तार किया है, इनमें से एक शिवप्रसाद का करीबी दोस्त है जबकि अन्य 3 में से एक लोहरीडीह अग्निकांड में मारे गए रघुनाथ साहू का बेटा और अन्य दो उसके रिश्तेदार है।

एसपी बालाघाट राजेंद्र सिंह ने बताया कि शिवप्रसाद साहू लोहारीडीह में साहू समाज का सर्कल का अध्यक्ष था। उसने आरोपी दिनेश और रोमन साहू के परिवार को समाज से बाहर कर दिया था, इसके बाद जब दिनेश के परिवार को दोबारा समाज में शामिल किया गया तो शिवप्रसाद की दखलअंदाजी की वजह से उन्हें फिर समाज से बाहर निकाल दिया गया। आरोपी दिनेश ने यह भी आरोप लगाया है कि शिवप्रसाद ने पिछले साल अपने साथियों के साथ मिलकर उसकी और उसके पिता रघुनाथ साहू की हत्या का प्रयास किया था, इसके बाद रघुनाथ साहू पर अपनी पत्नी के साथ छेड़खानी का झूठा मुकदमा करवाया था। दिनेश ने बताया कि शिवप्रसाद ने उसकी मां को साजिश कर सरपंची से भी हटवा दिया था और दिनेश और

उसके परिवार को जान से मारने की बार-बार धमकी दे रहा था। वहीं रोमन साहू ने बताया कि शिवप्रसाद ने उसके खेत को जानवरो से चरवा दिया गया था और खेत के घर में आग लगा दिया गया था। इन सब से तंग आकर दिनेश और रोमन ने शिवप्रसाद को हत्या कर रास्ते से हटाने का प्लान बनाया।

शिवप्रसाद के ख़ास दोस्त ने की हत्यारों की मदद

इस हत्याकांड में सबसे हैरान कर देने वाली बात यह है कि मृतक शिवप्रसाद के ख़ास दोस्त टेकचंद पटेल ने इस जघन्य अपराध में हत्यारों का साथ दिया। शिवप्रसाद की रेकी करने के बाद दिनेश और रोमन ने हत्या के प्लान में अपनी बुआ के बेटे राखीलाल को भी शामिल कर लिया। इसके बाद उन्होंने शिवप्रसाद के ख़ास दोस्त टेकचंद पटेल को पैसों का लालच देकर अपने साथ मिला लिया और लोकेशन बताने के लिए 10,000 रूपये बतौर एडवांस दिए। इसके बाद 14 सितंबर को टेकचंद ने दिनेश और रोशन को बताया कि शिवप्रसाद दमोह की तरफ गया है, इसके बाद सभी ने प्लानिंग कर मध्यप्रदेश के बीजाटोला गांव के खार में उसकी हत्या करने का प्लान बनाया।

शाम करीब 7 बजे टेकचंद ने शिवप्रसाद को चिकन पार्टी के नाम पर बीजाटोला बुलाया, जहां छिपकर पहले से इंतज़ार का रहे रोमन और राखीलाल ने उसे डंडे से मार कर और उसके गमछे से उसका गला घोंटकर बेहोश कर दिया। इसके बाद मौत को आत्महत्या का रूप देने के लिए पास के जंगल के पेड़ पर गमछे से बने फंदे में लटकाकर शिवप्रसाद की हत्या कर दी।

शिवप्रसाद साहू उर्फ कचरू साहू की हत्या में गिरफ्तार आरोपियों के नाम दिनेश कुमार पिता रघुनाथ साहू (33 वर्ष) निवासी ग्राम लोहारीडीह थाना रेंगाखार जिला कबीरधाम छत्तीसगढ रोमन पिता सनूकलाल साहू(रघुनाथ का भांजा) (32 वर्ष) निवासी ग्राम लोहारीडीह थाना रेंगाखार जिला कबीरधाम छत्तीसगढ टेकचन्द पिता सनूकलाल पटेल (24 वर्ष) निवासी भेलवाटोला थाना रेंगाखार जिला कबीरधाम छ.ग. राखीलाल पिता सुखराम हिरवाने (दिनेश की बुआ का बेटा) (40 वर्ष) निवासी बनाफरटोला ग्राम रेलवाही थाना बिरसा जिला बालाघाट।

हत्यारों ने इस तरह दिया वारदात को अंजाम

एसपी बालाघाट राजेंद्र सिंह ने बताया आरोपी दिनेश और रोमन काफी समय से इस ताक में थे कि कैसे शिवप्रसाद की हत्या की जाए। दोनों ने हत्या को अंजाम देने के कुछ दिनों पहले शिवप्रसाद की रेकी की, इस दौरान उन्हें पता चला की शिवप्रसाद दमोह आता जाता रहता है। इसके बाद उन्होंने शिवप्रसाद को मध्यप्रदेश की सीमा के भीतर मारने का प्लान बनाया, उन्हें ऐसी आशंका थी कि दूसरे राज्य की पुलिस शायद मामले को गंभीरता से ना ले और इस घटनाक्रम को आत्महत्या के रूप में फाइल कर मामले को रफा दफा कर दें।

सूरजपुर में 12वीं की छात्रा से सामूहिक दुष्कर्म

पुलिस ने जिले में वीवीआईपी का कार्यक्रम बताकर एफआईआर नहीं लिखी, इससे पीड़ित छात्रा को दो दिन इलाज नहीं मिला पाया

सूरजपुर। छात्रा से गैंगरेप का मुख्य आरोपी फंदे पर लटकता मिला है। जंगल में जहां दुष्कर्म हुआ वहीं पेड़ पर कांता सिंह की लाश मिली है। पुलिस के मुताबिक शव तीन दिन पुराना है, आशंका जताई जा रही है कि उसने 12-13 अक्टूबर की रात फांसी लगाई होगी।

12 वीं की छात्रा से गैंगरेप में कांता सिंह के साथ 5 और आरोपी शामिल थे। जंगल में दुष्कर्म के बाद लड़की की जमकर पिटाई की गई थी, बेहोश होने पर छात्रा को मृत समझकर आरोपी घटना स्थल से भाग निकले थे। परिजनों ने आरोप लगाया कि सूरजपुर पुलिस ने जिले में वीवीआईपी का कार्यक्रम बताकर एफआईआर नहीं लिखी। इससे पीड़ित छात्रा को दो दिन इलाज नहीं मिला पाया। पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने आईजी अंकित गर्ग को फोन कर नाराजगी जताई। इसके बाद मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में छात्रा का इलाज शुरू हुआ। छात्रा की हालत गंभीर है।

पुलिस के मुताबिक मृतक कांता सिंह का पीड़ित छात्रा से करीब तीन वर्षों से प्रेम सम्बन्ध था। छात्रा के पिता की ओर से कराई गई एफआईआर में इसका जिक्र किया गया है। रामानुजनगर प्रभारी राजेंद्र साहू ने यह भी खुलासा किया है कि पीडिता के परिजनों ने थाने में छात्रा से गैंगरेप की जानकारी नहीं दी थी।

मुख्य आरोपी की फंदे पर लटकते मिली लाश

सूरजपुर जिले के गांव की 12वीं की छात्रा अपने सहेलियों के साथ दशहरा कार्यक्रम देखने पहुंची थी। दशहरा मैदान में कार्यक्रम के बाद वह सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने के लिए रूक गई। 10 वीं कक्षा में सहपाठी रहा युवक कांता सिंह युवती से मिला। दोनों के बीच बातचीत हुई। छात्रा ने कांता सिंह से पानी मांगा। कांता ने छात्रा को पानी की बोतल लाकर दी। कांता सिंह ने पानी की बोतल में कुछ नशीला पदार्थ मिला दिया था। पानी पीने के बाद छात्रा को नींद आने लगी। छात्रा ने सहेलियों से घर चलने की बात कही। इस बीच आरोपी ने कांता ने छात्रा को घर छोड़ की बात कह झांसे में ले लिया। उसके साथ बाइक पर घर के लिए रवाना हो गयी। आरोपी कांता सिंह ने गांव के बाहर जंगल में छात्रा को ले गया, वहां उसके 5 और साथी पहुंच गए। सभी आरोपियों ने छात्रा के साथ गैंगरेप किया। इस दौरान आरोपियों ने छात्रा पर जानलेवा हमला करते हुए उसके साथ जमकर मारपीट भी की। इस घटना में छात्रा के बेहोश होने के बाद आरोपी छात्र घबरा गये, सांस नहीं चलने पर मृत समझकर छात्रा को मौके पर छोड़कर सभी आरोपी भाग निकले।

घटना के दूसरे दिन रविवार सुबह पीड़ित छात्रा किसी तरह जंगल से बाहर आई। इस बीच परिजन भी पहुंच गए थे। दिनभर परिजनों ने उसे घर पर रखा। होश आने पर सोमवार को रामानुजनगर पुलिस को घटना की सूचना दी। लेकिन थाने में पुलिस ने वीवीआईपी ड्यूटी बताकर पीड़ित छात्रा के साथ हुए गैंगरेप की रिपोर्ट नहीं लिखी।

छत्तीसगढ़ पुलिस को मिला राष्ट्रपति का पुलिस ध्वज सम्मान

रायपुर। छत्तीसगढ़ पुलिस के लिए यह एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण क्षण है, जब उन्हें 'राष्ट्रपति का पुलिस ध्वज' प्रदान किए जाने की स्वीकृति प्राप्त हुई है। यह विशेष ध्वज देश के चुनिंदा राज्यों की पुलिस इकाइयों को दिया जाता है, जो 25 वर्षों की अनुकरणीय सेवा और राष्ट्र के प्रति समर्पण का प्रतीक है। छत्तीसगढ़ पुलिस ने नक्सल मोर्चे पर साहस और दृढ़ता के साथ कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए यह सम्मान अर्जित किया है, जो उनकी उत्कृष्ट सेवा का प्रमाण है।

इस सम्मान के साथ, पुलिस बल के जवान इस ध्वज की प्रतिकृति को अपनी वर्दी पर प्रतीक चिन्ह के रूप में धारण करेंगे, जो उनके शौर्य और सेवा का प्रतीक होगा। राष्ट्रपति ध्वज किसी भी पुलिस या सैन्य बल के लिए सर्वोच्च मान्यता मानी जाती है और यह छत्तीसगढ़ पुलिस की निष्ठा, कर्तव्यपरायणता और परिश्रम की राष्ट्रीय स्तर पर सराहना को दर्शाता है।

यह सम्मान छत्तीसगढ़ पुलिस के साहस, अनुशासन और देशभक्ति का प्रमाण: मुख्यमंत्री साय

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा, यह सम्मान छत्तीसगढ़ पुलिस के साहस, अनुशासन और देशभक्ति का प्रमाण है। हमारे जवानों ने विपरीत परिस्थितियों में भी नक्सलियों के खिलाफ सफलता प्राप्त की है और कानून-व्यवस्था बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई है। यह ध्वज हमारे पुलिस बल के हौसले को और भी ऊंचा करेगा , उन्हें राज्य की सुरक्षा और सेवा के लिए और प्रेरित करेगा। मुख्यमंत्री साय ने पुलिस बल को बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान केवल एक ध्वज नहीं, बल्कि उन बहादुर जवानों के प्रति एक आदर है जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना राज्य की शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। इस ऐतिहासिक उपलब्धि ने छत्तीसगढ़ की जनता को भी गर्व का अवसर प्रदान किया है, जो राज्य की पुलिस की सेवा और समर्पण का सम्मान करती है।

हेड-कॉन्स्टेबल की पत्नी-बेटी को तलवार से काट डाला, पुलिस पर भी की फायरिंग

सूरजपुर। प्रदेश के सूरजपुर जिले में हेड कॉन्स्टेबल तालिब शेख की पत्नी और बेटी की तलवार और चाकू से काटकर हत्या कर दी गई। बदमाश कुलदीप साहू ने घर में घुसकर हत्या कर, लाश को करीब 5 किलोमीटर दूर नहर के पास खेत में फेंक दिया। अर्धनग्न हालत में लाश मिली है। वारदात के बाद गाड़ी से भाग रहे आरोपी का पीछा किया गया तो उसने पुलिस पर फायरिंग भी की। भीड़ ने आरोपी के घर और उसकी गाड़ियों में आग लगा दी है। मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है।

घटना के विरोध में आक्रोशित लोगों ने शहर बंद कराया और सूरजपुर थाने का घेराव कर दिया। आरोपी कुलदीप साहू के घर पर हमले की कोशिश भी की गई। हालांकि आरोपी के घरवाले घर बंद कर कहीं चले गए हैं। तनाव की स्थिति के देखते हुए शहर में पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। ताबिल शेख सूरजपुर रिंग रोड के पास किराए के मकान में पत्नी मेहू फैज और 16 वर्षीय बेटी आलिया शेख के साथ रह रहे थे। रविवार रात हेड कॉन्स्टेबल नाइट पेट्रोलिंग से वापस लौटा तो पूरा घर खून से सना था। पत्नी और बेटी लापता थी।

इस दौरान हेड कॉन्स्टेबल तालिब शेख ने वारदात की खबर कोतवाली थाने को दी। इसकी सूचना पर तत्काल पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। दोनों की खोजबीन शुरू की गई, लेकिन उनका पता नहीं चला। सोमवार सुबह मेहू फैज और आलिया शेख का शव सूरजपुर से करीब 5 किलोमीटर दूर जूर-पीढ़ा मार्ग पर खेत के नहर में पड़ा हुआ मिला।

आशंका है कि आरोपी कुलदीप सूनेपन का मौका पाकर पुलिसकर्मी के घर में घुसा। फिर मां-बेटी की हत्या घर पर की गई। दोनों के शवों को गाड़ी में डालकर नहर किनारे फेंक दिया। कुलदीप साहू की गाड़ी को भी पुलिस ने जब्त किया है, जिसमें खून ही खून फैला हुआ मिला है।

आरक्षक पर खौलता तेल भी डाला था आरोपी ने

दरअसल, दुर्गा विसर्जन से लौट रहे आरक्षक घनश्याम सोनवानी का विवाद कुलदीप साहू से बिरयानी सेंटर के पास हुआ था। इस दौरान कुलदीप ने आरक्षक घनश्याम सोनवानी पर खौलता तेल डाल दिया था। आरक्षक को झुलस जाने के बाद अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में भर्ती किया गया है।

घटना के बाद रात को पुलिस टीम कुलदीप साहू की खोजबीन में जुटी थी, जिसमें हेड कॉन्स्टेबल तालिब शेख भी शामिल थे। तालिब शेख ने रात को कुलदीप साहू को पकड़ने की कोशिश की तो उसने तालिब शेख पर गाड़ी चढ़ाने की कोशिश की। तलवार भी दिखाया था। आशंका है कि कुलदीप साहू इसके बाद तालिब शेख के घर पहुंचा। उसने उनकी पत्नी और बेटी की तलवार से गला काटकर हत्या की है। पुलिस आरोपी कुलदीप साहू की खोजबीन में लगातार छापे मार रही है। वह पुलिस गिरफ्त से बाहर है।

आरोपी ने पुलिसकर्मियों पर फायरिंग भी की

सूरजपुर एसपी एमआर आहिरे ने बताया कि रात में संदिग्ध गाड़ी का नंबर जारी किया गया था, जिसके पीछे पुलिस टीम लगी थी। आरोपी ने पुलिस टीम पर फायरिंग की। पुलिस टीम ने आरोपी की गाड़ी के चक्के पर फायर किया तो आरोपी गाड़ी छोड़कर भाग निकले। पुलिस ने आरोपी की गाड़ी को जब्त किया है, जिसमें खून फैला हुआ मिला है।

क्या अपराधियों को कानून का भय नहीं रहा ?

क्या छत्तीसगढ़ मे अपराधियों के हौसले बुलंद हो रहे है । क्या अपराधियों को कानून का भय नहीं रहा ? क्या शासन और प्रशासन कानून व्यवस्था बनाए रखने मे फेल हो रहा ? माह दर माह घटित होती आगजनी की घटनाए तो इशारा कुछ एसा ही बयान कर रही है । पहले बलौदा बाजार जला , फिर कवर्धा का लोहारिडीह और अब सूरजपुर ।

अपराधियों पर राजनैतिक संरक्षण की बाते अक्सर उठती ही रहती है , तभी तो ये अपराधी पुलिस जवानों पर भी हमला करने की हिमाकत कर बैठते है । सूरजपुर के दोहरे हत्याकाण्ड की घटना ने तो पूरे राज्य को झकझोर कर रख दिया है जिसमे एक पुलिस के जवान के घर मे घुस कर उसकी पत्नी और बेटी की तलवार से काट कर हत्या कर दी जाती है । इन घटनाओ को लेकर विपक्ष लगातार हमलावर भी है । सरकार के कानून व्यवस्था पर लगातार प्रश्न उठा रही है । प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि बीजेपी ने छत्तीसगढ़ को अपराध का गढ़ बना दिया है. पूरे प्रदेश में अराजकता का माहौल है. अपराधियों के हौसले इस कदर बुलंद हैं कि कानून से बेख़ौफ़ होकर घटना को अंजाम दे रहे हैं. बैज ने प्रदेश में बढ़ते अपराधों के लिए गृहमंत्री को जिम्मेदार बताते हुए मुख्यमंत्री से गृहमंत्री को बर्खास्त करने की मांग की है. बताया दें कि छत्तीसगढ़ के सूरजपुर जिले में एक आदतन बदमाश कुलदीप साहू ने थाने में पदस्थ प्रधान आरक्षक तालिब शेख की पत्नी मेहनाज शेख और बेटी आलिया शेख की धारदार हथियार से हत्या कर दी। एक अन्य आरक्षक पर खौलता तेल फेका, बुरी तरह से घायल आरक्षक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उसका इलाज चल रहा है। सूरजपुर के पुलिस अधीक्षक एमआर अहीरे ने घटना के बारे मे बताया कि रविवार रात जब दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के लिए थाने के बल की ड्यूटी लगाई गई थी, तब कुलदीप साहू ने एक आरक्षक के ऊपर खौलता तेल फेंक दिया। जब पुलिस दल को मामले की जांच करने और साहू को गिरफ्तार करने के लिए भेजा गया, तब साहू ने प्रधान आरक्षक शेख और पुलिस दल पर चार पहिया वाहन चढ़ाकर उन्हें मारने की कोशिश की। बाद में कुलदीप साहू वहां से फरार हो गया। अहीरे ने बताया कि दुर्गा प्रतिमा विसर्जन का कार्यक्रम खत्म होने के बाद जब शेख अपने घर पहुंचे, तो उन्होंने दरवाजा टूटा हुआ पाया तथा उनकी पत्नी और बेटी भी घर में मौजूद नहीं थीं। घर में भारी मात्रा में खून देखकर शेख को किसी अनहोनी की आशंका हुई, जिसके बाद उन्होंने पुलिस को इसकी सूचना दी। मौके पर पहुंचे पुलिस दल ने शेख की पत्नी और बेटी की खोज शुरू की।सोमवार सुबह शहर से लगभग चार किलोमीटर दूर पीढ़ा गांव के पास शेख की पत्नी और बेटी का शव अर्धनग्न हालत में बरामद किया गया।

डबल मर्डर के बाद जिला मुख्यालय मे जमकर बवाल हुआ. पहले तो आरोपी को पकड़ने गई पुलिस पर फायरिंग कर आरोपी फरार हो गया , फिर वारदात से गुस्साए लोगों ने पूरे शहर को बंद करवा दिया. लोगों में इस कदर गुस्सा था कि उन्होंने आरोपी के घर और गोदाम के बाहर जमकर आगजनी की. मौके पर पुलिस बल के साथ पहुंचे स्थरूभी मुसीबत में फंस गए. दावा किया जा रहा है कि भीड़ ने SDM पर भी हमला किया तो पुलिस ने किसी तरह से उन्हें बचा कर बाहर निकाला. घटना का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें SDM भागते हुए नजर आ रहे हैं. फिलहाल जिले के पुलिस कप्तान आहिरे ने आरोपी कुलदीप साहू को पकड़ने के लिए पुलिस की चार टीमें बनाई है. और साइबर पुलिस की भी मदद ली जा रही है.

कूलदीप साहू, के बारे मे जानकारी मिली की वह कबाड़ सहित जमीन की खरीदी बिक्री का काम करता है। आदतन अपराधी कुलदीप साहू की गिनती जिले के निगरानीशुदा बदमाश में होती है। उसे विधानसभा चुनाव के पहले 20 अक्टूबर 2023 को जिला बदर किया गया था। लूट, डकैती, मारपीट, चोरी समेत कई मामले उसके खिलाफ दर्ज हैं।पुलिस उसे कई मामलों में गिरफ्तार कर चुकी है। वह खुद को एनएसयूआई का नेता बताता है। हालांकि एनएसयूआई ने इस बात से इंकार किया है।

मगर जनता तो प्रश्न करेगी आखिर अपराधी इतने निर्भीक कैसे ? उन्हें शासन-प्रशासन का डर क्यों नहीं ? इन्हे किनका समर्थन मिलता है। परासन तो है .. जब पुलिसकर्मी के परिवार ही खतरे में है, तो आम नागरिकों की सुरक्षा का क्या हाल होगा ? समाज किस दिशा मे जा रहा है। क्या छत्तीसगढ़ मे भी योगी मॉडल की आवश्यकता है ? आखिर लगातार हो रहे अपराध और समाज में फैलते भय के वातावरण को मुक्त करने सरकार सुधार की कोई योजना कब लाएगी ?

मुख्य अपराधी की गाड़ी में एनएसयूआई का नेम प्लेट, इससे क्या अंदाजा लगाएं-

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज बस्तर प्रवास के दौरान सूरजपुर की घटना को लेकर कहा कि लोगों को कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए, इसके लिए शासन-प्रशासन है, और कानून है. इसके साथ उन्होंने कहा कि मुख्य अपराधी के गाड़ी में एनएसयूआई पदाधिकारी का नेम प्लेट लगा है, इससे क्या अंदाजा लगाया जाए.

प्रशासन अपनी कार्रवाई कर रही- साव

राज्य के उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि प्रशासन अपनी कार्रवाई कर रही है. जो भी दोषी पाया जाएगा उन पर कार्रवाई होगी. किसी को भी कानून व्यवस्था अपने हाथ में लेने की इजाजत नहीं है.

गुस्साई भीड़ ने आरोपी कुलदीप के घर, गाड़ी और गोदाम में लगाई आग

सूरजपुर में पदस्थ प्रधान आरक्षक की पत्नी और बेटी की हत्या से क्षेत्र में तनाव का माहौल उत्पन्न हो गया है. डबल मर्डर से इलाके की गुस्साई भीड़ ने आरोपी आदतन बदमाश कुलदीप साहू के घर, गाड़ी और गोदाम को आग हवाले कर दिया है. वहीं भीड़ ने क्षेत्र के एसडीएम जगन्नाथ वर्मा पर भी हमला कर दिया. इस बीच पुलिसकर्मी ने एसडीएम को भीड़ से बचाया. हिंसा की सभी घटनाओं की वीडियो सामने आई है.

बताया जा रहा है गुस्साई भीड़ ने आरोपी कुलदीप साहू के घर को सबसे पहले आग के हवाले किया. उसके बाद कुलदीप के रिश्तेदार के यहां गोदाम में आग लगाई गई है. साथ ही ट्रक और पिकअप वाहन को भी फूंक डाला.

शांति के टापू से प्रदेश नाम की कानून समाप्त हो चुकी: बघेल

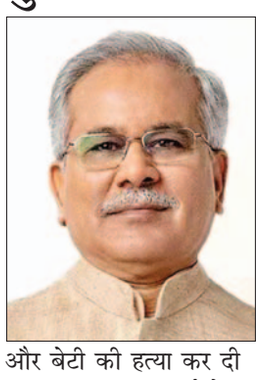

सूरजपुर घटना पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने ट्विट करते हुए कहा कि जनता के मन में कानून व्यवस्था और सरकार से पूरी तरह विश्वास इस कदर उठ चुका है कि जनता अब स्वयं न्याय करने निकल पड़ी है।

बघेल ने कहा कि ये क्या हो रहा है हमारे छत्तीसगढ़ में? लगने लगा है कि शांति का टापू कहे जाने वाले हमारे प्रदेश से कानून नाम की चीज़ समाप्त हो चुकी है. सूरजपुर में प्रधान आरक्षक की पत्नी और बेटी की हत्या कर दी गई. उसी हत्यारे ने इस घटना से पहले एक आरक्षक पर गर्म तेल उड़ेला था. जनता के मन में कानून व्यवस्था और सरकार से पूरी तरह विश्वास इस कदर उठ चुका है कि जनता अब स्वयं न्याय करने निकल पड़ी है. घरों में आगज़नी की घटनाएँ सुनकर व्यथित हूँ. कवर्धा के लोहारीडीह में भी यही हुआ था. इससे पहले लोगों ने कलेक्ट्रेट में आग लगा दी थी.

मैं सभी से शांति की अपील करता हूँ और विनम्र प्रार्थना करना चाहता हूं कि वे क़ानून व्यवस्था अपने हाथों में न लें.शासन प्रशासन से स्थिति नियंत्रित करने की अपेक्षा है.

सूरजपुर की घटना सरकार और पुलिस के तंत्र पर बड़ा सवाल

रायपुर। पूर्व उपमुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव ने राजीव भवन में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुये कहा कि पूरे प्रदेश के जैसे सूरजपुर जिले में लगातार आपराधिक घटनायें बढ़ गयी है। महिलायें, बच्चियां सुरक्षित नहीं है। कुछ दिन पहले ही एक आदिवासी बच्ची को कुछ युवक अपने मोटरसाइकिल में बैठाकर ले जाते हैं दुष्कर्म की संभावना है। बच्ची को गंभीर चोटें हैं, बाएं आंख में सूजन है बच्ची के बयान अनुसार काफी मारपीट भी उसके साथ की गई। उसने बताया कि कुछ पदार्थ या तो पिलाया गया या सुंघाया गया और बेहोशी की हालत में उसको अगवा किया गया। पुलिस ने रिपोर्ट नहीं लिखी मुख्यमंत्री जी का संभावित दौरा था बावजूद उसकी रिपोर्ट नहीं लिखी जाती है एफआईआर नहीं होता है, एमएलसी नहीं होती है। सूरजपुर जिला अस्पताल से जब मेडिकल कॉलेज अंबिकापुर रेफर किया जाता है फिर भी कार्रवाई नहीं होती है। परिवार बुजुर्गों से बच्ची के पिता से मैंने फोन से भी बात की और उन्हें एक ही बात कही कि हमें न्याय चाहिए। पता करने पर कि एमएलसी नहीं हो रही है बच्ची की देखरेख भी ठीक से नहीं हो

रही है ऐसा सुनने में आया था। आईजी से बात किया। आईजी साहब से बात के उपरांत मुझे बताया गया कि लगभग आठ बजे के आसपास पुलिस वाले पहुंचे और शायद बयान इत्यादि लिया। बच्ची अभी भी अस्पताल में है। स्थिति स्टेबल दिख रही है बच्ची स्वस्थ हो सकती है। शेष कार्रवाई जांच के तथ्यों के आधार पर की जाएगी। बच्ची ने कुछ बयान दिए हैं लेकिन वो जांच उपरांत मेरे ख्याल से तथ्यों की पुष्टि के बाद कार्रवाई धाराएं सम्पूर्ण लगेगी।

सूरजपुर में अत्यधिक वीभत्स घटना परसों रात की है, जहां एक जिलाबदर व्यक्ति ने पुलिसकर्मी हवलदार हैं, उनके घर में घुस कर उनकी पत्नी और उनकी लगभग 12-13 साल उम्र की बच्ची की नृशंस हत्या की।

प्रश्न है वह यही है कि एक जिला बदर का व्यक्ति कैसे जिले में घू रहा था? क्या यही पुलिस तंत्र की व्यवस्था छत्तीसगढ़ में कायम है? किसके संरक्षण में घूमने दिया जाता है? दुर्गा पूजा में भाग लेने दिया जाता है, विसर्जन में जाता है। पुलिस वाले को चुनौती देता है। खौलते हुए तेल की कढ़ाई एक के ऊपर फेंकता है। दूसरे को बुलाकर गाड़ी चढ़ाने की बात करता है।

थाना लगभग रोड के आमने-सामने हैं जो पुराना सूरजपुर का बस स्टैंड है, थाना है, लगभग 25-50 मीटर के आमने सामने में एक उत्तर की दिशा में है। नेशनल हाइवे के दक्षिण दिशा में हैं थाना।

यहां के घटनाक्रम होती है और शासन-प्रशासन ऐसा पंगु दिखता है, ऐसा निष्क्रिय दिखता है, ऐसा नाकाबिल दिखता है कि दो महिलाओं की, एक माँ की, और एक बच्ची की हत्या हो जाती। जिला बदर अपराधी इसके पूर्व जिले में घूमता हुआ पाया जाता है। पुलिस की लापरवाही से जिला बदर बदमाश खुले में घूम रहा था। उसने दोहरे हत्याकांड को अंजाम दिया।

प्रदेश में कानून व्यवस्था तार-तार - डॉ. महंत

रायपुर। नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने प्रदेश मे लगातार घट रही आपराधिक घटनाओ पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि, सुशासन का राग अलापने वाली भाजपा सरकार मे लगातार घटनाओ से प्रदेश भयभीत है।छत्तीसगढ़ राज्य को अस्तित्व मे आये 24 साल हो गए कभी भी क़ानून व्यवस्था इतनी लचर नहीं रही, जितनी पिछले दस महीने मे हो गयी है।

हम ही बनाएँ हैं, हम ही सँवारेंगे का यह नारा देने वाली भाजपा की सरकार से जनता पूछ रही है कि, छत्तीसगढ़ में क़ानून का राज कब सुधरेगा. ?

डॉ. महंत ने कहा बलौदाबाजार, कवर्धा अब सूरजपुर जिला जल रहा है। प्रदेश के फेलवर गृहमंत्री विजय शर्मा कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरूस्त करने के बजाय उलजुलूल बयानबाजी कर अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ रहे हैं।

छत्तीसगढ़ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष

डॉ. चरणदास महंत ने सूरजपुर में प्रधान आरक्षक की पत्नी और बेटी की हत्या के मामले में तल्ख शब्दों में बयान जारी करते हुए कहा कि आरोपी कोई भी हो और किसी से भी वास्ता रखता हो उस पर कठोर कार्यवाही करने से गृहमंत्री को किसने रोका है। हद तो तब हो गई जब इसी हत्यारे ने एक दिन पहले आरक्षक पर गर्म तेल उडेला था, उसके बाद भी पुलिस प्रशासन ने सतर्कता क्यों नहीं बरती। इससे पहले भी बलौदाबाजार में कलेक्ट्रेट को आगजनी के हवाले किया गया और कवर्धा के लोहारीडीह में भी इसी तरह की घटना घटित हुई। पूरे मामले में कानून व्यवस्था को नियंत्रित करने के बजाय प्रदेश के फेलवर गृहमंत्री केवल बयानबाजी करते रहे और अधिकारियों को बलि का बकरा बनाया गया जबकि इसकी पूरी जिम्मेदारी सबसे पहले गृहमंत्री पर बनती है जिन्हें प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आखिर इतनी खुली छूट क्यों दे रखी है, चिंता का विषय है।

नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत ने सूरजपुर में दोहरे हत्याकांड के बाद दशहरा देखने पहुंची एक 12वीं की छात्रा के साथ एक बेहद ही शर्मनाक गैंगरेप की घटना ने मन को उद्वेलित कर दिया है। अपराध और अपराधी किसी के सगे नहीं होते उन पर कड़ी कार्यवाही किया जाना चाहिए।

एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष समेत 5 आरोपी भेजे गए जेल

सूरजपुर के प्रधान आरक्षक तालिब शेख की पत्नी व पुत्री की हत्या के कुख्यात आरोपी कुलदीप साहू के साथ एनएसयूआई सूरजपुर के जिलाध्यक्ष समेत 5 आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ में आरोपी ने आरक्षक पर खौलता हुआ तेल डालने, पुलिसकर्मियों पर कार चढ़ाने का प्रयास करने, पुलिस की गाड़ी पर फायरिंग करने तथा प्रधान आरक्षक की पत्नी व बेटी की हत्या का अपराध करना स्वीकार किया है। पुलिस ने बताया कि जिलाबदर के दौरान नगर में उसकी उपलब्धता को लेकर पुलिस द्वारा कार्रवाई किए जाने से वह आक्रोशित था। मामले में प्रधान आरक्षक तालिब शेख की सक्रियता के कारण भी वह नाराज था। फिर बदला लेने की नीयत से उसने वारदात को अंजाम देना स्वीकार किया है। प्रारंभिक पीएम रिपोर्ट में मृतकों से बलात्कार की बात सामने नहीं आई है। पुलिस ने पांचों आरोपियों को जेल भेज दिया है। सूरजपुर पुलिस ने बताया कि 13 अक्टूबर की रात आरोपी कुलदीप साहू अपने साथियों आर्यन विश्वकर्मा उर्फ गोल्डी, एनएसयूआई के सूरजपुर जिलाध्यक्ष चन्द्रकांत चौधरी उर्फ सीके एवं रिंकू सिंह के साथ पुराने बस स्टैंड सूरजपुर में बैठा हुआ था। रात करीब 9 बजे थाना सूरजपुर के आरक्षक धनश्याम सोनवानी पुराने बस स्टैण्ड की ओर गया।

यहां उसने कुलदीप को देख जिलाबदर होने की वजह से उसे पकडने का प्रयास किया। इस पर कुलदीप साहू द्वारा आरक्षक के ऊपर कड़ाही का खौलता तेल फेंक दिया गया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। इसके बाद आरोपी की धरपकड़ के लिए थाने से तत्काल प्रधान आरक्षक तालिब शेख, उदय सिंह व अन्य पुलिसकर्मियों को कुलदीप साहू को पकडने रवाना किया गया।

पुलिसकर्मी पुराना बस स्टैण्ड एवं थाना सूरजपुर के आसपास आरोपियों की खोजबीन कर ही रहे थे कि आरोपी कुलदीप साहू द्वारा अपने साथियों आर्यन विश्वकर्मा उर्फ गोल्डी, एनएसयूआई जिलाध्यक्ष चन्द्रकांत चौधरी उर्फ सीके, रिंकू सिंह के साथ रात करीब 10 बजे पुलिसकर्मियों को स्वीफ्ट डिजायर कार क्रमांक सीजी 29 एडी 5666 में कुचलकर हत्या का प्रयास किया गया।

अपराधी कुलदीप साहू का कांग्रेस से कोई लेना देना नहीं - शुक्ला

प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि इस घटना के अपराधी कुलदीप साहू का कांग्रेस से कोई लेना देना नहीं है वह कांग्रेस के किसी भी विंग, मोर्चा प्रकोष्ठ का किसी भी स्तर का पदाधिकारी, कार्यकर्ता नहीं है। प्रदेश में बढ़ते हुये अपराधों को रोक पाने में नाकाम सरकार अपराधों से ध्यान हटाने इस प्रकार का षड़यंत्र कर रही है।

सूरजपुर हत्याकांड का आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने लोकेशन के आधार पर बलरामपुर थाने के ठीक सामने बस को रोक जांच की गई,उसी दौरान वह पकड़ा गया। जिला मुख्यालय बलरामपुर के साइबर सेल में आरोपित को रखा गया है। इधर सूरजपुर से पुलिस अधिकारियों की एक टीम बलरामपुर के लिए रवाना हो चुकी है।

रविवार की देर रात सूरजपुर थाने में पदस्थ प्रधान आरक्षक तालिब शेख के घर में घुसकर बदमाश कुलदीप साहू ने उनकी पत्नी और बेटी की तलवार और चाकू से काटकर हत्या कर दी थी। पुलिस की अलग-अलग टीमों को उसकी खोजबीन में लगाया गया था। घटना के बाद वह झारखंड की ओर भाग गया था।मंगलवार दोपहर बस से वह झारखंड से बलरामपुर जिले में प्रवेश किया था। इस दौरान पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

आरोपित की कार में पुलिस ने की फायरिंग-

सूरजपुर जिले के लटोरी पुलिस चौकी अंतर्गत करवां गांव में एक स्विफ्ट कार पंचर हालत में पुलिस ने जब्त की है। उक्त कार के दरवाजे और भीतर के हिस्से में खून के कुछ धब्बे भी नजर आ रहे हैं। इधर एसएसपी एमआर आहिरे का कहना है कि देर रात पुलिस की सर्चिंग टीम ने संदिग्ध कार को रुकने का इशारा किया था लेकिन नहीं रुकने पर उक्त कार की टायर में फायर कर उसे पंचर कर दिया गया। आरोपित की ओर से भी फायरिंग की बात कही जा रही है।

कांग्रेस के आपराधिक चरित्र का शर्मनाक नमूना- श्रीवास्तव

अब इस घटना पर राजनीति भी होने लगी है भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव ने आरोप लगाया कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस अपने गुण्डा तत्वों के जरिए कानून-व्यवस्था बिगाड़कर अराजकता और आतंक का जहर घोलने में लगी है। यह कांग्रेस के आपराधिक चरित्र का शर्मनाक नमूना है । प्रदेश की भाजपा सरकार में ऐसे तत्वों को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

संपादकीय

खत्म होता 'लाल उग्रवाद'

देश में नक्सलवाद अपनी अंतिम सांसें ले रहा है। छत्तीसगढ़ के बस्तर के अबूझमाड़ घने जंगलों में सुरक्षा बलों ने एक ही लड़ाई में 31 नक्सलियों को ढेर कर हमारे आकलन को पुख्ता किया है। अबूझमाड़ ऐसा पिछड़ा और खतरनाक इलाका है कि सरकारी अधिकारी वहां जाने से पहले कांपने लगते हैं, लिहाजा उस इलाके में हमारे जांबाज सुरक्षा बलों की यह बहुत बड़ी जीत है। सिर्फ छत्तीसगढ़ के कुछ इलाकों तक नक्सली सिमट कर रह गए हैं। पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, बिहार, झारखंड सरीखे राज्यों में नक्सली बेहद उग्र और व्यापक थे, लेकिन अब उनके अवशेष ही मौजूद हैं। इन राज्यों के गरीबों, किसानों, आदिवासियों और भूमिहीनों में कोई भी भूमि-सुधार लागू नहीं हो सका है अथवा इन तबकों की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में कोई सुधार नहीं हुआ है। नक्सलवाद की शुरुआत इसी मकसद से हुई थी, लेकिन बाद में वे 'माओवादी उग्रवादी' बनकर ही रह गए। तो नक्सलवाद नाम की क्रांति के मायने क्या रह गए हैं? अब यह कोरी हिंसा और आतंकवाद के एक प्रारूप का नाम रह गया है। अबूझमाड़ के जंगलों में जो ऑपरेशन किया गया, वह छत्तीसगढ़ के इतिहास में 'अकेला सबसे बड़ा' माना जाएगा। यह इसलिए भी 'अभूतपूर्व' माना जाएगा, क्योंकि ऑपरेशन के दौरान नक्सलियों के शीर्ष कमांडरों-कमलेश और नीति-को भी मार दिया गया। यह हमारे सुरक्षा बलों की रणनीति की शानदार जीत है। नक्सलियों के सफाये के मद्देनजर यह साल 'सर्वश्रेष्ठ' के तौर पर दर्ज किया जाएगा, क्योंकि इस साल अभी तक 202 माओवादी उग्रवादियों को मारा जा चुका है, जबकि 723 ने आत्मसमर्पण किया और 812 नक्सलियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। सुरक्षा के क्षेत्र में यह कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है। नक्सलवाद के संदर्भ में हमारे सुरक्षा ऑपरेशन की सफलता का कोई इकलौता कारण नहीं है। ऑपरेशन कई दशकों से जारी रहे हैं, लेकिन ऐसी कामयाबी नहीं मिली थी, जिसके आधार पर आकलन किया जा सके कि अब 'लाल उग्रवाद' समाप्ति के दौर में है। नक्सलियों की सोच थी कि भारत में संसदीय लोकतंत्र खत्म किया जाए। 2050 तक देश की सत्ता पर 'माओवादी चेहरा' आसीन होना चाहिए।

जिस दौर में नक्सलवाद का विस्तार हो रहा था और खुद केंद्रीय गृह मंत्रालय मानता था कि 100 से अधिक जिलों में नक्सलवाद की मौजूदगी है, तब यह उम्मीद नहीं थी कि 'लाल उग्रवाद' अबूझमाड़ के जंगलों तक सिमट कर रह जाएगा। नक्सलवाद के खिलाफ शानदार सफलता में केंद्र और राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय और समझ, माओवादी गढ़ के निकट अधिकतर सुरक्षा-शिविरों की स्थापना और उनके संचालन, तकनीकी सुधार के तहत ड्रोन की तैनाती और सभी क्षेत्रों में बेहतर संचारी जुड़ाव आदि का भरपूर योगदान रहा है। हमारे सुरक्षा दस्ते किसी एक बल के जवानों से नहीं बनते, बल्कि वे कई बलों का मिश्रण होते हैं और उसी ताकत से ऑपरेशन करते हैं। इन्हीं ऑपरेशनों के कारण ही नक्सली हिंसा में, 2023 में, करीब 72 फीसदी की कमी आई है। यह गिरावट देश भर में देखी गई है। हमारे मिश्रित सुरक्षा बलों के ऑपरेशन नियमित तौर पर जारी रहते हैं,

एक 'रतन' जो अब खो गया ...

रतन टाटा आजादी के बाद के उन उद्योगपतियों में से एक थे, जिन्होंने न केवल अपने हम उम्र और आज 40-50 साल के उम्र में जी रहे लोगों को प्रेरणा दी है। बल्कि मिलेनियर भी उनके बड़े फॉलोअर्स रहे थे।

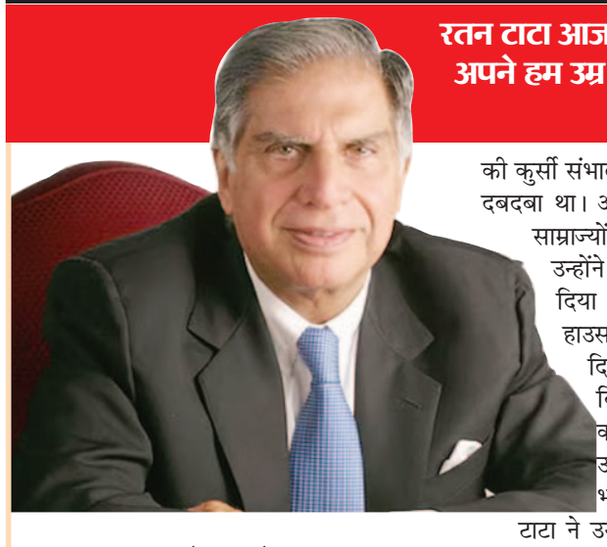

नरेन्द्र पाण्डेय

रतन टाटा सिर्फ महज नाम नहीं बल्कि एक संस्थान थे। उन्होंने कर्मयोग के जरिए यह बताया कि आप मेहनत, ईमानदारी और दूसरों के लिए अच्छी सोच के साथ बहुत आगे तक का सफर तय कर सकते हैं। उनकी यह सोच सिर्फ दिमाग या किताब के पन्नों तक कैद नहीं रही बल्कि उसे जमीन पर उतारा भी। 1991 में जब टाटा ग्रुप की कमान संभाली उस समय इस समूह का राजस्व 4 बिलियन डॉलर था और 2012 में अवकाश लिया उस वक्त इस समूह का कुल राजस्व 100 बिलियन डॉलर के पार था। यानी महज 21 साल के नेतृत्व में असाधारण कामयाबी का प्रदर्शन किया।1962 में टाटा इंडस्ट्रीज में सहायक के रूप में समूह में शामिल हुए थे, लेकिन उन्होंने मार्च 1991 में ही चेयरमैन की कुर्सी संभाली, जब समूह पर पुराने लोगों का दबदबा था। अपने डिवीजनों को अर्ध-स्वायत्त साम्राज्यों के रूप में संचालित कर रहे थे, उन्होंने एक-एक करके क्षत्रपों को हटा दिया और समूह के मुख्यालय बॉम्बे हाउस में सत्ता को केंद्रीकृत कर दिया।2012 में टाटा समूह ने 100 बिलियन डॉलर की बाधा को पार कर लिया था और इस तरह की ऊंचाइयों तक पहुंचने वाला पहला भारतीय समूह बन गया था।

टाटा ने उस वक्त ग्रुप की कमान संभाली थी जब दुनिया ने उदारीकरण की राह पकड़ी। 1991 के उस दौर में खतरे और अवसर दोनों को रतन टाटा ने समझा और भुनाया।टाटा ने सीमेंट, कपड़ा, सौंदर्य प्रसाधन और फार्मास्यूटिकल्स जैसे खराब प्रदर्शन वाले क्षेत्रों को बेचने, सॉफ्टवेयर और स्टील जैसे मौजूदा व्यवसायों को दोगुना करने और दूरसंचार, यात्री कार, बीमा, वित्त, खुदरा और विमानन जैसे नए क्षेत्रों में प्रवेश करने जैसे साहसिक निर्णय लिए।

रतन टाटा आजादी के बाद के उन उद्योगपतियों में से एक थे, जिन्होंने न केवल अपने हम उम्र और आज 40-50 साल के उम्र में जी रहे लोगों को प्रेरणा दी है। बल्कि मिलेनियर भी उनके बड़े फॉलोअर्स रहे थे। उनकी लोकप्रियता का आलम यह है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर उनके 10 मिलियन फॉलोअर्स हैं। जबकि X पर 12.6 मिलियन फॉलोअर्स है। भारत में रतन टाटा एक ऐसा नाम रहा है जिसने आम आदमी को कार मालिक बनने का सपना दिखाया, यही नहीं उन्होंने ग्लोबल लेवल पर भारतीय कंपनियां अंग्रेजों का गुरूर तोड़ सकती है, इसका अहसास भी कराया।

उन्होंने अपने दौर में बड़ी ग्लोबल डील की थी। इसमें टाटा ने Tetley को साल 2000 में कोरस स्टील को 2007 में और जगुआर लैंडरोवर को साल 2008 में खरीदा था। यही नहीं उन्हीं के दौर में टीसीएस दुनिया में छाई और आज वह भारत की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी बन गई है। इसके अलावा रतन टाटा देश के उन चुनिंदा उद्योगपतियों में से एक थे, जिन्होंने 80 और 90 के दशक में उदारीकण का पुरजोर समर्थन किया। उनकी रिस्क लेने की क्षमता का ही असर था, कि टाटा ग्रुप दुनिया के 100 से ज्यादा देशों में पहुंच गया। यही नहीं उनका एक ऐसा सपना जो उनके चेयरमैन रहते पूरा नहीं हो पाया लेकिन उनके जीवन काल में पूरा हुआ। वह था एयर इंडिया की टाटा ग्रुप में वापसी। जो कभी टाटा ग्रुप की हुआ करती थी, लेकिन बाद में उसे सरकार ने खरीद लिया था।

28 दिसंबर 1937 को जन्मे रतन टाटा को को भारत सरकार ने पद्म विभूषण और पद्म भूषण से भी नवाजा है। उन्होंने टाटा ग्रुप में अपना कैरियर साल 1961 में 24 साल की उम्र में शुरू किया था। उनका पहला काम टाटा स्टील में शॉप फ्लोर का ऑपरेशन मैनेज करना था। वहां से बिजनेस के गुर सीखते हुए रतन टाटा 1991 में टाटा ग्रुप के चेयरमैन बने थे। जिस समय रतन टाटा ने ग्रुप की कमान संभाली थी, उसका ज्यादा बिजनेस भारत में था। और उसकी कमाई करीब 5.7 अरब डॉलर थी। उस समय उन्होंने जेआरडी टाटा से ग्रुप की कमान मिली थी। और जब उन्होंने 2012 में करीब 21 साल के कार्यकाल के बाद ग्रुप की कमान छोड़ी थी, तो ग्रुप का रेवेन्यू 12 गुना बढ़ चुका था। और करीब 83 अरब डॉलर का ग्रुप बन चुका था। इसी तरह 2016 में साइरस मिस्त्री को कमान सौंपते वक्त, रतन टाटा की अगुआई में ग्रुप का रेवेन्यू 20 गुना बढ़ चुका था। टाटा ग्रुप के चेयरमैनशिप से वह 75 साल की उम्र में रिटायर हुए।

रतन टाटा के निधन के बाद पूरा देश शोक में है। यकीनन भारत ने एक रत्न खो दिया मगर लीजेंड कभी मरते नहीं .....

राहुल गांधी की विश्वसनीयता पर उठता प्रश्नचिन्ह

नरेन्द्र पाण्डेय

दिल्ली से भाजपा की सांसद बाँसुरी स्वराज का एक बयान आया जिसमे उन्होंने कहा की INDIA अलायेंस के अंदर एसी सुगबुगाहट है कि राहुल गांधी विपक्ष के सर्वमान्य नेता नहीं है और उन्हे लीडर ऑफ अपोजिशन के पद पर भी नहीं रहना चाहिए । बात उठ रही है कि जो अपनी पार्टी को मैनेज नहीं कर सकते वो विपक्षी एकता को क्या मैनेज करेंगे ? 'टीएमसी' और 'आप' के कुछ सांसद, नेता , ये सवाल उठा रहे है कि राहुल का व्यवहार लीडर ऑफ अपोजिशन जैसा नहीं है । सवाल इस लिए भी उठ रहा है कि जब हरियाणा का चुनाव आपको जीत की थाली मे परोस कर दे दिया गया था तब आप हरियाणा के एक नेता भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के भरोसे पूरा चुनाव छोड़कर सप्ताह भर के लिए विदेश चले गए थे ।

सुना तो यह भी जा रहा है की हरियाणा हार की समीक्षा बैठक मे राहुल गांधी नाराज होकर बाहर निकल आए थे और कहा की पार्टी के लोकल लीडर और कार्यकर्ताओं को इस हार की जिम्मेदारी लेनी चाहिए । इसका उन्हे एहसास होना चाहिए . लेकिन आप लोगों को एहसास नहीं हो रहा है । बाँसुरी स्वराज ने कहा की विपक्ष मे एसे नेताओ की कमी नहीं है जो विपक्ष के नेता हो सकते है और यदि विपक्ष के नेता ये तय कर ले की हम इस पद को रोटैशन वाइज़ चलाएगे हालांकि यह INDIA अलायेंस का इंटरनल मैटर है मै तो सलाह दे रहीं हूँ । अब इस बयान से राहुल गांधी की कुर्सी जाएगी या बचेगी ये तो अलग विषय है लेकिन बाँसुरी स्वराज ने के मुद्दा तो उछाल ही दिया है।

हरियाणा चुनाव परिणाम से राहुल को एक झटका और लगा है। उनके झूठ की कलई खुल गई है। याद है न किस तरह लोक सभा चुनाव के समय राहुल गांधी और उनकी टीम ने देश की जनता के सामने एक झूठ फैलाया था कि यदि मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेगे तो देश का संविधान बदल देगे आरक्षण को खत्म कर देंगे । जिसका थोड़ा लाभ उन्हे यूपी-बिहार चुनाव मे मिला भी । साथ ही कुछ अन्य राज्यों मे भी इसका आंशिक प्रभाव हुआ और भाजपा बहुमत से 32 सीटे पीछे रह गई । लेकिन हरियाणा विधानसभा चुनाव ने इस झूठ को पकड़ लिया और साथ ही राहुल गांधी की विश्वसनीयता और उनकी योग्यता पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया । मीडिया ने भी लोकसभा चुनाव के दौरान जो उनकी देश के सामने एक सशक्त नेता की छवि बनाई थी उसमे अब गिरावट आ रही है । इसमे कोई दो मत नहीं है कि उन्हे लीडर ऑफ अपोजिशन का पद कानून रूप से मिला है लेकिन शायद योग्यता के आधार पर वे इस पद के लिए उपयुक्त नहीं है।

ऊपर से बाँसुरी स्वराज का यह बयान एक तरफ INDIA गठबंधन मे फूट ला सकता है । और साथ ही राहुल गांधी का मोरेल भी डाउन करने मे कामयाब हो सकता है ।

देखते है इस पर विपक्ष के किसी नेता की की क्या प्रतिक्रिया आती है .

एक मन से ही जीवन का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं

श्री श्री आनंदमूर्ति

व्यक्ति को एक बुद्धि, एकचित्त होना चाहिए, अनेक बुद्धि नहीं। एक प्रसिद्ध कहानी है। एक तालाब में बहुत सारी मछलियां थीं। मछलियों को पता चला कि अगले दिन सुबह मछुआरे उन्हें पकड़ लेंगे। मछलियों में कई बड़ी ज्ञानी थीं। एक का नाम शतबुद्धि था। उसने अपनी करीबी मछली से कहा मछुआरों को आने दो, मेरे पास तैरने और उनसे खुद को बचाने के सौ तरीके हैं। एक और मछली थी जिसका नाम था सहस्रबुद्धि, यानी हजार दिमाग वाली। सहस्रबुद्धि ने कहा, मेरे पास तैरने और खुद को बचाने के हजारों तरीके हैं। एक और मछली थी जिसका नाम था एकबुद्धि। उसने अपनी मित्र से कहा, 'देखो मेरा एक ही मन है और वह मन मुझसे कह रहा है, अगर मछुआरे अपना जाल फेंकेंगे तो मैं नहीं बचूंगी। इसलिए रात के समय ही हम दूसरे तालाब में चलते हैं।' वे चले भी गए।

अगली सुबह मछुआरे आए, अपना जाल फेंका और तालाब की सारी मछलियां पकड़ लीं। एकबुद्धि ने अपनी मित्र से कहा, 'वह देखो। शतबुद्धि नामक मछली मछुआरे के जाल में कूद रही है और सहस्रबुद्धि मछली मछुआरे के हाथ से लटक रही है। मैं एकबुद्धि, शुद्ध जल में खेल रही हूं।' सबको एक मन से काम करना चाहिए। यह एक मन सिखाता है कि जब सभी परमपिता की संतान हैं, तो उच्च या निम्न का कोई अंतर नहीं हो सकता है। कोई व्यक्ति अधिक विद्वान हो सकता है, समाज उसे अधिक सम्मान दे सकता है, लेकिन एक इंसान के रूप में वह दूसरे से श्रेष्ठ नहीं हो सकता है। सभी परम पुरुष की संतान हैं, इसलिए जो जाति भेद को स्वीकार करता है वह परम पुरुष को अप्रसन्न करता है। जो दूसरे को मूर्ख समझता है, दूसरों से द्वेष करता है, वह मानसिक रोग से ग्रस्त है। वह व्यक्ति परमपिता की संतान से घृणा करता है, इसलिए उसे उनकी कृपा कभी नहीं मिल सकती।

बिटिया

घर की बिटियाँ
आंगन की चिड़ियाँ
होती है.. एक सी .....
चुलबुल -चुलबुल करती
चहक- चहक, आंगन में चहकती
खेल-कूद ,गुनगुनाती ।

शक्ति भक्ति...
तुलसी सी ऊर्जा लीए
ठाकुर जी की शरणागति ले
नव ग्रुहप्रवेश वह करती

तभी तो वह हर घर को
गुल गुलशन गुलफाम बनाती
गुल गुलशन गुलफाम बनाती

चिड़ियाँ , बेटियाँ एक सी
बड़े होते ही ,अगले दालान
अपनों से दूर, अपनो के लीए
एक नए. बसेरे, बस जाती।

प्रमिला शर्मा.
खरियार रोड, उड़ीसा

काश कोई होता जो बिन कहे सब समझ जाता

काश! काश कोई होता जो बिन कहे सब समझ जाता,
काश! कोई होता जो मुझसे ज्यादा मुझे जानता।
काश! काश कोई होता...

काश! काश वो मेरी मुस्कान की गहराई को नापता,
काश! कहकर चले गए हैं सब कंधे पे हाथ रखता।
काश! काश कोई होता ....

काश! काश वो कहता दुनिया को जो भी दिखा,
आंसू किनारे के मुझसे छिपा नहीं सकता।
काश! काश कोई होता.....

काश! काश वो मेरे भीतर के तुफान को समझता,
काश ! मैं हूं ना कहकर वो मुझे गले लगाता।
काश! काश कोई होता.....।

काश! काश कोई होता जो मुझसे बहुत प्यार करता,
काश ! मेरे दर्द को वो अपना समझता।
काश! काश कोई होता...।

धरती शर्मा 'धरी'
कच्छ -गुजरात

हरियाणा में भाजपा के जीत के 5 फैक्टर

नरेन्द्र पाण्डेय

हरियाणा विधानसभा चुनाव में जीत के दहलीज पर पहुंचकर भी कांग्रेस हाथ मिलती रह गई भाजपा देखते ही देखते बाजी मार ले गई और कांग्रेस विधानसभा चुनाव हार गई. भले ही यह जख्म कांग्रेस को हरियाणा में मिला हो लेकिन ये जो नतीजे आए उसने कांग्रेस की अपने सहयोगियों के साथ सीट शेयरिंग वाली नेगोशिएशन की ताकत को भी कम कर दिया है. जम्मू कश्मीर और हरियाणा के चुनावी नतीजे ने दो बातों पर मुहर लगा दी है पहले कांग्रेस को अब भी आगे बढ़ने के लिए बैसाखी की जरूरत है और दूसरा बीजेपी के साथ सीधी लड़ाई में कांग्रेस अभी लड़खड़ाकर गिर जाती है. इस चुनावी नतीजे का असर कांग्रेस को आने वाले महाराष्ट्र और झारखंड में होने वाले विधानसभा चुनाव पर जरुर पड़ेगा. और फिर अगले साल तो दिल्ली में भी चुनाव होना है.

इन नतीजो से एक बात तो स्पष्ट हो रही है कि जम्मू कश्मीर में कांग्रेस का एनसी यानी के नेशनल कांफ्रेंस के साथ अगर गठबंधन नहीं होता तो उसे कश्मीर की सत्ता से भी दूर रहना पड़ता. जम्मू कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस में 51 में से 42 सीटों पर जीत दर्ज की जबकि कांग्रेस को 32 में से केवल 6 सीटें ही मिली.

वैसे बीजेपी का हरियाणा में अब तक सबसे शानदार प्रदर्शन रहा है बीजेपी ने यहां 90 में से 48 सीटें जीती है और कांग्रेस ने 37 सीटें. हरियाणा में 90 में से 19 सिम ऐसी

रही जहां बीजेपी ने 5000 या उससे कम वोटो से चुनाव जीता एक्सीड उचाना कला की सीट थी जहां कांग्रेस पार्टी के नेता चौधरी वीरेंद्र सिंह के बेटे चौधरी विजेंद्र सिंह महाराज 32 वोटो से चुनाव हार गए इस सीट पर आम आदमी पार्टी को लगभग ढाई हजार और नोट को 187 वोट मिले कहते हैं अगर कांग्रेस पार्टी इन 10 सीटों पर थोड़ी और मेहनत करती तो यह सीटें कांग्रेस के पास होती. तब बीजेपी को 48 की जगह 38 सिम मिलती और कांग्रेस के पास 37 की जगह 47 सिटी होती लेकिन भाजपा ने वोटो के इस लीकेज का फायदा उठाकर 5000 या उससे कम वोटो के अंतर में से यह 10 सिम जीत ली और वह तीसरी बार सरकार बनाने में कामयाब हो गई.

हरियाणा में बीजेपी की जीत के पांच फैक्टर रहे हैं प्रथम बीजेपी ने स्थानीय मुद्दों पर चुनाव लड़ा और उसने भ्रष्टाचार बेरोजगारी किसान और ग्राम पंचायत को लेकर बड़े फैसले लिए और मुख्यमंत्री आवास को भी आम लोगों की शिकायतों के लिए खोल दिया

दूसरा इस बार आरएसएस ने बीजेपी को पूर्ण सहयोग किया और उसके लिए ग्रामीण इलाकों में काफी मेहनत की पहले अनुमान था कि ग्रामीण इलाकों की 61 में से 45 सीटे कांग्रेस जीत सकती थी और 10 सीटे भाजपा के पास आ रही थी लेकिन आरएसएस की मदद से बीजेपी ने ग्रामीण इलाकों में 29 सीटे जीती और कांग्रेस को भी इतनी ही सीटों पर जीत मिली.

तीसरी बात विपदलों के बिखराव से बीजेपी को काफी फायदा हुआ हरियाणा में इंडियन नेशनल लोकदल और बहुजन समाज पार्टी के गठबंधन को 6त्न वोट मिले निर्दलीय उम्मीदवारों को 11त्न वोट मिला आम आदमी पार्टी को 1.8त्न वोट मिले और जननायक जनता पार्टी को लगभग एक प्रतिशत वोट मिला विपदलों के अलग-अलग चुनाव लड़ने से बीजेपी को काफी लाभ पहुंचा है.

कांग्रेस के अति आत्मविश्वास से भी बीजेपी को फायदा हुआ तो कांग्रेस की अधूरी लड़ाई से भी बीजेपी को लाभ पहुंचा और कुमारी शैलजा और भूपेंद्र हुड्डा के बीच जो मतभेद थे उससे कांग्रेस कई सीटों पर कमजोर हो गई थी

पांचवा कारण रहा कांग्रेस ने गैर जाट वॉटर में 21% दलित वोटर को साधने के लिए ज्यादा मेहनत की जिसमें 21 परिषद में से 14त्न दलित वोट बीजेपी के पास चले गए. और इस बात को शायद बीजेपी भी समझ रही है इसलिए तो आज प्रधानमंत्री ने मनोहर लाल खट्टर की काफी तारीफ भी की है .

कांग्रेस की हरियाणा में हर की एक बड़ी वजह तो आम आदमी पार्टी के साथ उसका गठबंधन न होना भी बताया जा रहा है वह इसलिए कि यदि चुनाव आयोग के डाटा को देखा जाए तो आधा दर्जन से ज्यादा ऐसी सीटे हैं जहां पर आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस का पूरा खेल ही बिगाड़ दिया इन सीटों पर कांग्रेस की हारने की सबसे बड़ी वजह आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार ही रहे जिन्हें कांग्रेस उम्मीदवार के बीजेपी कैंडिडेट के सामने हार के मार्जिन से ज्यादा वोट मिले.

जिन सीटों पर आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस का खेल बिगड़ उसमें से रही आसन्द जहां 2306 वोट से कांग्रेस हारी और आपको मिले 4290. डाबवली 610 वोट से कांग्रेस हारी और आपको मिले 6606 वोट उचानाकला कांग्रेस की हार का मार्जिन 32 वोट रहा जबकि आम आदमी पार्टी को यहां मिले 2495 वोट रानिया में कांग्रेस 4100 वोट से हारती है आपको मिलता है 4697 वोट दादरी में कांग्रेस 1957 वोट से हारती है आपको मिले 1300 वोट रेवाड़ी में 28769 वोट से कांग्रेस हार गई आपको मिला यहां 18000 वोट भिवानी में कांग्रेस ने सीपीएम के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ा और 32714 वोट से हार गई जहां आपको मिला 17000 से ज्यादा वोट नारनौल में कांग्रेस 17171 वोट से हारी और यहां पर आम आदमी पार्टी को मिले 6135 वोट.

तस्वीर तो साफ है आम आदमी पार्टी भले ही हरियाणा में अपना खाता नहीं खोल पाई लेकिन कांग्रेस की सरकार बनाने के खेल को पूरी तरह से बिगड़ने में कामयाब जरूर हो गई माना जा रहा है कि कांग्रेस ने आखिरी वक्त तक आम आदमी पार्टी के गठबंधन के लिए उलझाए रखा जिसकी वजह से आम आदमी पार्टी कांग्रेस से बेहद नाराज देखी थी और यही वजह रही है कि आम आदमी पार्टी ने 90 में से एक सीट छोड़कर बाकी सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़ा कर दिए और इस तरह कांग्रेस का खेल बिगड़ गया.

भले ही हरियाणा में आम आदमी पार्टी खाता नहीं खोल पाई लेकिन जम्मू कश्मीर में पार्टी ने एक सीट पर जीत तो दर्ज कर ही ली है और इस पर अरविंद केजरीवाल का कहना है कि अब जम्मू कश्मीर पांचवा राज्य है जहां आम आदमी पार्टी का एक विधायक बन गया.

राज्य में ईको टूरिज्म को बढ़ावा और जल संरक्षण पर दें विशेष ध्यान- डेका

छत्तीसगढ़ हरित शिखर सम्मेलन के समापन में शामिल हुए राज्यपाल

रायपुर। पानी होगा तो पेड़ रहेगा और पेड़ होगा तो पानी रहेगा, इसलिए दोनों को बचा कर रखना है और हर व्यक्ति को एक पेड़ मां के नाम लगाना है। प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर छत्तीसगढ़ राज्य में ईको टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाए साथ ही जल संरक्षण के लिए भी सभी को ध्यान देने की जरूरत है। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने आज रायपुर में आयोजित हरित शिखर सम्मेलन के समापन कार्यक्रम में उक्त बातें कहीं।

वन और जलवायु परिवर्तन विभाग के सहयोग से विबगयोर नॉर्थ फांउडेशन और प्रज्ञा प्रवाह संस्था द्वारा आयोजित तीन दिवसीय छत्तीसगढ़ शिखर सम्मेलन के समापन कार्यक्रम में राज्यपाल श्री डेका बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। श्री डेका ने छत्तीसगढ़ के 32 प्रतिशत वन क्षेत्रों में बेहतर वन प्रबंधन के लिए सरकार को बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के पहल पर एक पेड़ मां के नाम अभियान में हर व्यक्ति की भागीदारी होनी चाहिए, 140 करोड़ जनसंख्या वाले हमारे देश में हर व्यक्ति एक पेड़ लगाएगा तो देश का परिदृश्य बदल जाएगा। उन्होंने कहा कि पेड़ लगाने के बाद उसका संरक्षण भी करना होगा। आज जंगलों में अंधाधुंध पेडों के काटे जाने से वहां रहने वाले जानवरों को भोजन की दिक्कत हो रही है, इसलिए वे भोजन

की खोज में आबादी वाले क्षेत्रों में आते हैं।

राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि जल संरक्षण भी बहुत जरूरी है। इस पर सभी ध्यान देना होगा तभी मानव सभ्यता कायम रहेगी। उन्होंने रेन हार्वेस्टिंग को जरूरी बताया और कहा कि अमेरिका में 60 प्रतिशत घरों में रेन हार्वेस्टिंग की व्यवस्था की जाती है लेकिन हमारे देश में यह केवल 10 प्रतिशत ही है, इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है। जो देश पानी बचाता है उसकी अर्थव्यवस्था भी उन्नत होती है।

राज्यपाल ने छत्तीसगढ़ में ईको टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार पर बल दिया इससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था भी आगे बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि सामुदायिक सहभागिता की भावना हमारी लोक संस्कृति से उपजी है। आज के समय में जब पर्यावरणीय चुनौतियां बढ़ती जा रही है, सामुदायिक सहभागिता की भावना हमें मिलकर समाधान खोजने और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से इन चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देती है। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि अपनी लोक संस्कृति को सहजने के साथ-साथ इसे पर्यावरण संरक्षण के लिए एक प्रेरणा के रूप में अपनायें। श्री डेका ने अपील करते हुए कहा कि हम मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करेंगे, पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहेंगे और सतत् विकास की राह पर चलेंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने कहा कि छत्तीसगढ़ में जंगलों को पुर्नजिवित करने का कार्य प्राथमिकता से किया जा रहा है और ज्यादा से ज्यादा जंगल लगाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने भविष्य में टूरिस्ट बोर्ड के गठन की जानकारी दी और कहा कि आने वाली पीढ़ी के लिए प्रकृति की रक्षा करना हमारा सबसे बडा कर्तव्य है। कार्यक्रम में प्रधान मुख्य वन संरक्षक श्री वी.श्रीनिवास राव ने स्वागत उद्बोधन करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। एमिटी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पीयुषकांत पांण्डेय ने सम्मेलन का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों को ग्रीन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ बायो डायवर्सिटी बोर्ड के संचालक श्री राकेश चतुर्वेदी, मेघालय स्कूल शिक्षा बोर्ड के चेयरमेन श्री सी.पी. मारक, प्रज्ञा प्रवाह संस्था के श्री अतुल नागले, वैज्ञानिक पर्यावरण विशेषज्ञ, प्रोफेसर, प्राध्यापक, अन्य प्रबुद्धजन तथा छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

आगामी खरीफ विपणन वर्ष में 160 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी का अनुमान

- **खाद्य मंत्री की अध्यक्षता में मंत्रि-मंडलीय उप समिति की बैठक सम्पन्न**
- **पारदर्शी और निर्बाध धान खरीदी के लिए इलेक्ट्रानिक वेटिंग मशीन के उपयोग पर जोर**

रायपुर। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री दयाल बघेल की अध्यक्षता में महानदी भवन में आगामी खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी एवं कस्टम मिलिंग की नीति की समीक्षा कर सुझाव देने हेतु गठित मंत्रि-मंडलीय उप समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में मंत्री-मंडलीय उप समिति के सदस्य वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा सहकारिता मंत्री श्री केदार कश्यप, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा 20 सूत्रीय कार्यान्वयन मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल और राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री श्री टंक राम वर्मा शामिल हुए।

खाद्य मंत्री श्री दयाल दास बघेल की अध्यक्षता में हुई बैठक में चालू खरीफ विपणन वर्ष में 160 लाख मीट्रिक धान खरीदने का अनुमान रखा गया है। इस वर्ष दिपावली का पर्व और राज्य स्थापना दिवस राज्योत्सव को ध्यान में रखते हुए धान खरीदी 15 नवम्बर से शुरू किए जाने के संबंध में भी चर्चा की गई। लेकिन राज्य मंत्रि परिषद की बैठक में ही इस आशय का अंतिम निर्णय लिया जाएगा। सभी उपार्जन केन्द्रों को इलेक्ट्रॉनिक वेटिंग मशीन की व्यवस्था करने को भी कहा गया है।

बैठक में प्रदेश के किसानों से सुगमता पूर्वक धान खरीदने के लिए सभी आवश्यक सुविधाओं को सुदृढ़ करने पर भी व्यापक चर्चा की गई। बैठक में धान खरीदी सुव्यस्थित हो तथा किसानों को सरलता के साथ बारदाना उपलब्ध हो सकें इसके लिए जूट कमिश्नर और जेम के माध्यम से बारदाना खरीदी का निर्णय लिया गया है।

बैठक में धान उठाव और कस्टम मिलिंग, केन्द्रीय पूल और छत्तीसगढ़ नागरिक आपूर्ति निगम में चावल जमा कराने तथा परिवहन के संबंध में भी विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी धान खरीदी के साथ-साथ धान का उठाव किया जाएगा। 31 मार्च तक अनिवार्य रूप से धान उठाव का निर्णय लिया गया है।

गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ में पिछले वर्ष समर्थन मूल्य पर रिकॉर्ड 144.92 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई थी। वर्तमान में राज्य में 2058 सहकारी समितियां तथा 2739 धान उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से आगामी खरीफ विपणन वर्ष में 160 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी का अनुमान लगाया गया है।

धान खरीदी व्यवस्था के सुचारू रूप से संचालन के लिए कम्प्यूटर, इंटरनेट के साथ ही उपार्जन केन्द्र आने वाले किसानों के लिए बैठक व पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करने को भी कहा गया है।

छत्तीसगढ़ की सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के लिए निवेशक सम्मेलन आयोजन का प्रस्ताव रखा

राज्यपाल डेका ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात कर रखा प्रस्ताव

रायपुर। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण से नई दिल्ली में सौजन्य मुलाकात की। श्री डेका ने केंद्रीय वित्त मंत्री से विभिन्न क्षेत्रों में घरेलू संस्थागत निवेश और विदेशी संस्थागत निवेश के द्वारा छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के संबंध में विस्तार से चर्चा की। इसके अलावा राज्यपाल ने छत्तीसगढ़ को एक समृद्ध अर्थव्यवस्था बनाने के महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण के साथ छत्तीसगढ़ निवेशक सम्मेलन 2025 के आयोजन का प्रस्ताव रखा। इसका उद्देश्य राज्य में उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग के साथ बड़े और छोटे उद्योगों, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट निवेश को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि इस तरह के निवेश से छत्तीसगढ़ के युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

श्री डेका ने श्रीमती सीतारमण को बताया कि छत्तीसगढ़ में भरपूर प्राकृतिक, खनिज एवं वन संपदा है, जिसके कारण छत्तीसगढ़ में विकास की अपार संभावनाएं है। इस दृष्टिकोण से छत्तीसगढ़ में निवेशक सम्मेलन का आयोजन महत्वपूर्ण है। उन्होंने वित्त मंत्री से छत्तीसगढ़ के विकास को लेकर अन्य कई मुद्दों पर भी चर्चा की।

छत्तीसगढ़ के सफल नक्सल ऑपरेशन पर केंद्रीय गृह मंत्री ने की तारीफ

नक्सलवाद के खिलाफ छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की रणनीति की हुई सराहना

रायपुर। देश के नक्सल प्रभावित राज्यों में जारी नक्सलवाद के खिलाफ चल रहे अभियानों पर एक अहम बैठक आज नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने की, जिसमें छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और अन्य नक्सल प्रभावित राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने हिस्सा लिया।

इस महत्वपूर्ण बैठक का केंद्र बिंदु छत्तीसगढ़ का हाल ही में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ नक्सल विरोधी ऑपरेशन था, जिसमें राज्य की पुलिस ने 31 नक्सलियों को ढेर किया। इस ऑपरेशन में छत्तीसगढ़ पुलिस की कुशल रणनीति और राज्य सरकार की योजनाओं की सफलता पर विशेष चर्चा की गई। बैठक में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जेपी नड्डा, केंद्रीय गृह राज्यमंत्री श्री नित्यानंद राय तथा छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा भी उपस्थित थे।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस ऑपरेशन में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय और उनकी टीम के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इस वर्ष जनवरी से लेकर अब तक छत्तीसगढ़ के सुरक्षा बलों ने लगभग 194 नक्सलियों को मुठभेड़ में मार गिराए हैं। वहीं 801 नक्सली गिरफ्तार हुए एवं 742 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया है। उन्होंने कहा आज भी जो युवा नक्सलवाद में लिप्त है उनसे आग्रह है कि हथियार छोड़ कर मुख्य धारा से जुड़े। सभी राज्यों ने आपके पुनर्वास के लिए बेहतर योजनाएं बनाई हैं उसका फायदा लीजिए।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने बैठक में नक्सल ऑपरेशन की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कैसे राज्य पुलिस और खुफिया एजेंसियों ने महीनों की मेहनत और प्लानिंग के बाद इस ऑपरेशन को अंजाम दिया। ऑपरेशन में करीब 1000 जवान शामिल थे, जिन्होंने 15 किलोमीटर के दायरे में स्थित गवाड़ी पहाड़ को घेरकर 31 नक्सलियों को ढेर किया। इस ऑपरेशन में कई बड़े नक्सली नेता मारे गए, जिनमें 16 पर कुल 1 करोड़ 30 लाख का इनाम घोषित था। मुठभेड़ में 18 पुरुष और 13 महिला नक्सली मारे गए।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपने प्रेजेंटेशन में बताया कि कैसे राज्य की पुलिस फोर्स ने सटीक खुफिया जानकारी के आधार पर इस ऑपरेशन को अंजाम दिया।

मुख्यमंत्री ने बैठक में केवल ऑपरेशन की सफलता पर ही नहीं, बल्कि राज्य में चल रहे विकास कार्यों पर भी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास कार्यों की गति बढ़ाई गई है। हम निरंतर गाँवों तक बुनियादी सुविधाएँ पहुंचा रहे हैं, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, और महिला सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के लगातार मिल रहे मार्गदर्शन में हमने माओवादियों के कोर को तोड़ा। ऐसे एरिया में हमने 32 नये कैम्प स्थापित किये हैं, जिसे वो अपनी राजधानी तक कहते थे। उनकी बटालियन के कमांडर हिड़मा के गाँव में भी हमने कैंप स्थापित किया और उसकी माँ को भी स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई।

भविष्य की योजनाओं और लक्ष्य की दी जानकारी

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ सरकार की आगे की योजनाओं पर भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार का मुख्य लक्ष्य नक्सलियों के बचे हुए गढ़ों को समाप्त करना और इन इलाकों में स्थाई शांति और विकास सुनिश्चित करना है। निकट भविष्य में, दक्षिण बस्तर में 29 नए सुरक्षा कैंपों की स्थापना की जाएगी, ताकि नक्सलियों के प्रभाव को खत्म किया जा सके।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने छत्तीसगढ़ में हुए सफल ऑपरेशन की तारीफ करते हुए अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों से आग्रह किया कि वे भी छत्तीसगढ़ की खुफिया तकनीकी और आपसी समन्वय के आधार पर अपने अपने राज्यों में ऑपरेशन को अंजाम दे सकते हैं। गृह मंत्री ने यह भी कहा कि केंद्र सरकार छत्तीसगढ़ सहित अन्य नक्सल प्रभावित राज्यों को हर संभव सहायता देने के लिए प्रतिबद्ध है और राज्य में विकास कार्यों में तेजी लाने के लिए पूरा समर्थन देगी।

विश्व मानक दिवस पर मानक महोत्सव आयोजित

रायपुर। रायपुर में 14 अक्टूबर को भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा विश्व मानक दिवस के अवसर पर एक भव्य मानक महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ नेता बृजमोहन अग्रवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महोत्सव का उद्देश्य उद्योगों, व्यापारिक संस्थाओं और उपभोक्ताओं के बीच मानकों के महत्व को बढ़ावा देना था। इस वर्ष की थीम थी,'बेहतर विश्व के लिए साझा दृष्टिकोण' जो वैश्विक सहयोग और मानकों के पालन की आवश्यकता पर जोर देती है।

अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि बृजमोहन अग्रवाल ने मानकों के महत्व और उनके अनुपालन की आवश्यकता पर गहन विचार प्रस्तुत किए।

उन्होंने कहा कि मानक केवल उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए नहीं होते, बल्कि यह समाज की सुरक्षा, उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता और उपभोक्ता हितों की रक्षा के लिए भी आवश्यक होते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि मानक हमारे जीवन के हर क्षेत्र में निहित हैं, चाहे वह भोजन हो, निर्माण हो, या तकनीकी उत्पाद, और इनका पालन एक सुरक्षित और बेहतर जीवन के लिए अनिवार्य है।

बृजमोहन अग्रवाल ने विश्व मानक दिवस की थीम 'बेहतर विश्व के लिए साझा दृष्टिकोण' पर विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि एक बेहतर और सुरक्षित विश्व का निर्माण तभी संभव है जब हम सभी एक साझा दृष्टिकोण के साथ काम करें। मानक वैश्विक व्यापार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि ये विभिन्न देशों और उद्योगों के बीच समरसता और पारदर्शिता बनाए रखने में मदद करते हैं।

उन्होंने कहा कि जब सभी देश और उद्योग एक समान दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है, जिससे उपभोक्ताओं को बेहतर और सुरक्षित उत्पाद मिलते हैं।

बृजमोहन अग्रवाल ने उपभोक्ता सुरक्षा के संदर्भ में भी मानकों की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मानकों का पालन उपभोक्ताओं के लिए सुरक्षा की गारंटी है। इसके साथ ही, उन्होंने उपभोक्ताओं से आग्रह किया कि वे जागरूक बनें और उन उत्पादों को ही चुनें जो मानकों का पालन करते हों। जागरूक उपभोक्ता ही उद्योगों को गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

राष्ट्रीय डाक सप्ताह पर डाक विभाग ने दी अपनी नई सेवाओं की जानकारी

रायपुर। नागरिकों और व्यवसाईयों के दैनिक जीवन में डाक की भूमिका के साथ-साथ वैश्विक, सामाजिक और आर्थिक विकास में उनके रोजमर्रा के जीवन में डाक की भूमिका के बारे में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से 9अक्टूबर 1874 में यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन की स्थापना हुई थी. इसकी वर्षगांठ पर भारतीय डाक विभाग प्रतिवर्ष राष्ट्रीय डाक सप्ताह मनता है. इस वर्ष भी 7 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक छत्तीसगढ़ के डाक परिमंडल के सभी संभागीय कार्यालय में प्रतिदिन विषयवार कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है.इस दौरान आयोजित कार्यक्रमों में ग्राहकों को डाक विभाग की सभी सेवाओं के साथ ही नई सेवाओं की जानकारी भी दी जा रही है.

7 अक्टूबर से शुरू हुये इस आयोजन में प्रथम दिन मेल और पार्सल दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें मेल और पार्सल दिवस पर ग्राहकों के साथ कस्टम मीट का आयोजन किया गया जिसमे उन्हें नई पहलुओं के बारे में जानकारी दी गई तथा ग्राहकों से ली जाने वाली सेवाओं के बारे में उनकी प्रक्रिया भी प्राप्त की गई.

8 तारीख को फिलेटली अर्थात डाक टिकट संग्रहण दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें स्कूलों में ढाई आखर के संबंध में वर्कशॉप कराया गया तथा डिजिटल युग में पत्र लेखन के महत्व को बताया गया.

9 तारीख को विश्व डाक दिवस के उपलक्ष्य में सभी प्रमुख कार्यालय में बैनर पोस्टर इत्यादि का प्रदर्शन किया गया.

लोगों को सशक्त बनाने तथा संचार को सक्षम बनाने के डेढ़ सौ वर्ष की थीम के अवसर पर पद यात्रा कार्यक्रम द्वारा 'फिट पोस्ट फिट इंडिया' का संदेश पहुंचाया गया साथ ही एक पेड़ मां के नाम के तहत वृक्षारोपण किया गया. अंतर्राष्ट्रीय पत्र लेखन प्रतियोगिता 2024 के राज्य स्तर के विजेताओं कुमारी महिमा सिंह कुमारी संस्कृति एवं कुमारी तनिष्का यादव को पुरस्कृत भी किया गया.

10 अक्टूबर को अंत्योदय दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें समाज के गरीब, पिछड़े वर्ग को अवसर प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ाने के उपायों पर चर्चा हुई.इस हेतु राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के साथ मिलकर विशेष सत्र का आयोजन किया जा रहा है

11 तारीख को वित्तीय सशक्तिकरण दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमे बालिकाओं के उज्जवल भविष्य को केंद्रित करते हुए अधिक से अधिक सुकन्या समृद्धि खाता खोलने का प्रयास किया जाएगा एवं महिला सशक्तिकरण को ध्यान में रखते हुए महिला सम्मान बचत पत्र के खाते भी खोले जाएंगे.

राष्ट्रीय डाक सप्ताह के उत्सव के माध्यम से डाक विभाग अपनी सभी नवीनतम सेवाओं को जनता के बीच ले जाने का एक अच्छा प्रयास कर रहा है. एवं सभी संभागों में ग्राहक मिलन सम्मेलन का आयोजन कर डाक विभाग अपनी सुविधाओं के सुधार हेतु आवश्यक सुझाव भी इकट्ठा कर रहा है।

साय सरकार का बड़ा फैसला, 14 नवंबर से होगी धान खरीदी, दिवंगत शिक्षक पंचायत के आश्रितों को मिलेगी अनुकंपा नियुक्ति

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में आज मंत्रिमंडल की बैठक में 14 नवंबर से धान खरीदी का फैसला लिया गया. इसके साथ दिवंगत शिक्षक (पंचायत) संवर्ग के कर्मचारियों के पात्र आश्रितों को अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान करने का भी फैसला लिया गया.

मंत्रालय महानदी भवन में आयोजित कैबिनेट की बैठक में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन तथा कस्टम मिलिंग की नीति का अनुमोदन किया गया. मंत्रिमण्डलीय उप समिति की अनुशंसा के आधार पर राज्य में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 के दौरान समर्थन मूल्य पर राज्य के किसानों से नगद एवं लिंकिंग में धान खरीदी 14 नवम्बर 2024 से प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया. राज्य में धान खरीदी 31 जनवरी 2025 तक की जाएगी.

समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के लिए कृषि विभाग द्वारा एकीकृत किसान पोर्टल के माध्यम से किसान पंजीयन की प्रक्रिया जारी है, जो 31 अक्टूबर 2024 तक चलेगी. वर्ष 2024-25 में 160 लाख टन धान के उपार्जन का अनुमान है. समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के लिए बायोमेट्रिक व्यवस्था पूर्व वर्ष की भांति लागू रहेगी.

मंत्रिपरिषद में खरीदी केन्द्रों में धान के नियंत्रित एवं व्यवस्थित रूप से उपार्जन के लिए सीमांत एवं लघु कृषकों को अधिकतम दो टोकन तथा दीर्घ कृषकों को अधिकतम तीन टोकन प्रदाय करने का निर्णय लिया गया. सभी खरीदी केन्द्रों में इलेक्ट्रॉनिक तौल यंत्र के माध्यम से धान खरीदी होगी. धान खरीदी के लिए 4.02 लाख गठान नये जूट बारदाना जूट कमिश्नर के माध्यम से क्रय करने की स्वीकृति दी गई है. धान खरीदी के लिए कुल 8 लाख गठान बारदाने की जरूरत होगी.

मंत्रिपरिषद की बैठक में खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में सहकारी समितियों में कार्यरत डाटा एन्ट्री ऑपरेटरों को 18,420 रुपए प्रतिमाह के मान से कुल 12 माह का मानदेय भुगतान का निर्णय लिया गया. इस पर कुल 60 करोड़ 54 लाख रुपए का व्यय भार आएगा. जिसके भुगतान के लिए पूर्व वर्षों की भांति राशि मार्कफेड को प्रदाय की जाएगी.

विशुद्ध रूप से राजनीतिक आंदोलनों से संबंधित प्रकरणों को जनहित में न्यायालय से वापस लिये जाने के संबंध में गठित मंत्रिपरिषद की उपसमिति द्वारा अनुशंसित 49 प्रकरणों को न्यायालय से वापस लिए जाने का निर्णय लिया गया है.

मंत्रिपरिषद ने छत्तीसगढ़ पुलिस कार्यपालिक (अराजपत्रित) सेवा भर्ती नियम 2021 के नियम 8 (2) में सूबेदार/उप निरीक्षक संवर्ग/प्लाटून कमाण्डर के पद पर नियुक्ति हेतु भर्ती प्रक्रिया वर्ष 2024 में केवल एक बार के लिए अभ्यार्थियों की निर्धारित अधिकतम आयु सीमा में 05 वर्ष की छूट प्रदान करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है. सभी छूटों को मिलाकर अधिकतम आयु सीमा 45 वर्ष से अधिक नहीं होगी.

राज्य के सभी ग्राम पंचायतों के प्रत्येक घर में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु छत्तीसगढ़ ग्रामीण पेयजल संचालन एवं संधारण नियम, 2024 के प्रारूप का अनुमोदन किया गया. जिसके तहत पंचायत की सामान्य प्रशासन समिति अपने दायित्वों के साथ-साथ ग्रामीण पेयजल व्यवस्था के संचालन एवं संधारण का कार्य भी देखेगी. ग्राम सभा के अनुमोदन से जल प्रभार का निर्धारण के अलावा नये कनेक्शन का निर्णय, वित्तीय प्रबंधन, मरम्मत, पेयजल गुणवत्ता का निर्धारण एवं शिकायतों का निराकरण करेगी.

दिवंगत शिक्षक (पंचायत) संवर्ग के कर्मचारियों के पात्र आश्रितों को अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया. इसके तहत ऐसे शिक्षक (पंचायत) संवर्ग के कर्मचारी जिनकी मृत्यु सेवाकाल में हो गई थी, और जिनके आश्रित नियमानुसार अनुकम्पा हेतु पात्र है, उन्हें छत्तीसगढ़ शिक्षक (पंचायत) संवर्ग नियम 2018 के आधार पर पात्रता अनुसार अनुकम्पा नियुक्ति दी जाएगी. ऐसी स्थिति में स्कूल शिक्षा विभाग से पद पूर्ति के लिए पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को पद प्रदाय करने के पूर्व के आदेश को शिथिल करने का निर्णय भी लिया गया है, ताकि दिवंगत के पात्र आश्रितों को अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान की जा सके.

मीसाबंदियों का राजकीय सम्मान के साथ होगी अंत्येष्ठि,अंतिम संस्कार के लिए दी जाएगी 25 हजार की सहायता

लोकनायक जयप्रकाश नारायण (मीसा/डी.आई.आर. राजनैतिक या सामाजिक कारणों से निरूद्ध व्यक्ति) सम्मान निधि नियम, 2008 में संशोधन का अनुमोदन किया गया. जिसके तहत दिवंगत लोकतंत्र सेनानियों का राजकीय सम्मान के साथ अंत्येष्ठि की जाएगी तथा अंत्येष्ठि के लिए उनके परिवार को 25 हजार रुपए की सहायता राशि दी जाएगी.

देशी/विदेशी मदिरा बोतलों पर चस्पा किये जाने हेतु Excise Adhesive Label (Hologram) होलोग्राम में अधिक सुरक्षात्मक फीचर्स उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार के उपक्रम भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक रोड (महाराष्ट्र) से होलोग्राम क्रय करने का निर्णय लिया गया.

छत्तीसगढ़ राज्य की औद्योगिक नीति 2019-24 के तहत स्टील डाउन स्ट्रीम प्रोजेक्ट्स, एथेनॉल इकाइयों एवं कोर सेक्टर के सीमेंट उद्योगों के लिये विशेष निवेश प्रोत्साहन पैकेज के निर्धारण का अनुमोदन किया गया.

लोकसभा की रसायन और उर्वरक संबंधी स्थाई समिति की बैठक में शामिल हुए सांसद बृजमोहन

रायपुर। रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल मंगलवार को नई दिल्ली में लोकसभा सचिवालय में रसायन और उर्वरक संबंधी स्थायी समिति की बैठक में शामिल हुए और विभाग से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की। समिति ने उन विषयों को जिन्हें पूर्व समिति द्वारा विचार हेतु लिया गया था, परंतु जिनके संबंध में समिति जांच पूरी नहीं कर सकी थी और उन पर प्रतिवेदनों को प्रस्तुत नहीं कर सकी थी, पर चर्चा हुई।

रसायन और उर्वरक संबंधी स्थायी समिति का गठन 26 सितम्बर, 2024 को किया गया है। समिति का क्षेत्राधिकार रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के निम्नलिखित विभाग इस समिति के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत उर्वरक विभाग, रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग और औषध विभाग आते हैं। समिति के कार्य रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के तीनों विभागों की अनुदानों की मांगों पर विचार करना और उनके संबंध में प्रतिवेदन प्रस्तुत करना है।

साथ ही रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय से संबंधित ऐसे विधेयकों की जांच करना जो माननीय अध्यक्ष, लोक सभा अथवा माननीय सभापति, राज्य सभा द्वारा, यथास्थिति, समिति को सौंपे गए है और उनके संबंध में प्रतिवेदन प्रस्तुत करना है।

समिति मंत्रालयों/विभागों के वार्षिक प्रतिवेदनों पर विचार करना और उनके संबंध में प्रतिवेदन प्रस्तुत करना और दोनो सभाओं में प्रस्तुत राष्ट्रीय दीर्घावधि नीति संबंधी दस्तावेजों, अध्यक्ष लोक सभा अथवा सभापति, राज्य सभा, यथास्थिति, द्वारा समिति को सौंपे गए हों पर विचार करना और उन पर प्रतिवेदन प्रस्तुत करती है।

स्थायी समितियां संबंधित मंत्रालयों/विभागों के दिन-प्रतिदिन के प्रशासनिक मामले तथा वे मामले जो अन्य संसदीय समितियों के विचाराधीन है, पर विचार नहीं करती हैं।

2023-24 के कार्यकाल के दौरान, समिति ने 08 प्रतिवेदन, अर्थात् 02 विषय संबंधी प्रतिवेदन और रसायन और उर्वरक मंत्रालय के तीन विभागों से संबंधित 06 की गई कार्रवाई प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। इस दौरान समिति ने विस्तृत जांच हेतु 15 विषयों यथा उर्वरक विभाग से संबंधित 05 विषयों, रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग से संबंधित 06 विषयों और औषध विभाग से संबंधित 04 विषयों का चयन किया गया है।

स्वच्छता का संदेश देता छठ महापर्व 5 नम्बर को

रायपुर। उत्तर भारतीयों का एक महत्वपूर्ण पर्व है छठ. चार दिवसीय यह महापर्व इस वर्ष 5 नवम्बर की नहाय-खाय के साथ प्रारम्भ होगी. छठ महापर्व आयोजन समिति महादेव घाट रायपुर द्वारा आयोजित बैठक में समिति के सदस्यों ने सर्व सम्मति से छठ पूजा 2024 को भव्यता एवं पारम्परिकता के साथ मनाने का निर्णय लिया तथा आयोजन की रूपरेखा तैयार की .

समिति के अध्यक्ष राजेश सिंह ने बताया कि समिति ने रायपुर में 50 से अधिक स्थानों जैसे खारुन नदी का महादेव घाट, व्यास तालाब और अन्य तालाबो के किनारे इस वर्ष भी छठ पूजा धूमधाम से मनाया जायेगा . 7 नवम्बर को महादेव घाट पर संध्या महाआरती के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा जिसमे अंतर्राष्ट्रीय लोक गायिका कल्पना पटवारी,गायत्री यादव, लोक गायिका परिणिति राव पटनायक एवं अन्य स्थानीय कलकार प्रस्तुति देंगे . इसके पूर्व समिति जिला प्रशासन और नगरनिगम के सहयोग से महादेव घाट सहित सभी घाटो की सफाई करेगी. राजेश सिंह ने कहा प्राचीन काल से छठ महापर्व स्वच्छता का संदेश देता आ रहा है . छठ पर्व स्वच्छता का सबसे बड़ा प्रतीक है . मान्यताओं के अनुसार छठी मैया विश्व की सबसे बड़ी स्वच्छता की ब्रांड एम्बेसडर है यह पर्व दुनिया का एकमात्र पर्व है जिसमे उगते और डूबते दोनों सूर्य की पूजा की जाती है . जो एकरूपता समानता और समरसता का प्रतीक है .

अब ट्रेनों में ले सकेंगे छत्तीसगढ़ी व्यंजनों का लुत्फ़

रेलवे बोर्ड ने आईआरसीटीसी को निर्देश

रायपुर। रेलवे बोर्ड ने आईआरसीटीसी को छत्तीसगढ़ी व्यंजन को अपने मैन्यू शामिल करने का निर्देश दिया है। जिसके कारन अब छत्तीसगढ़ से होकर गुजरने वाली ट्रेनों में अब यात्री चीला, फरा, अनरसा जैसे व्यंजनों का लुत्फ़ उठा सकेंगे।इस निर्देश के बाद आईआरसीटीसी ने प्रीमियम ट्रेन वंदे भारत समेत अन्य ट्रेनों में छत्तीसगढ़ी व्यंजन फरा, चीला, मुंगौड़ी, बरा, गुल गुल भजिया, सोहारी, ठेठरी, खुरमी, चौसेला और लड्डू उपलब्ध कराने की पूरी तैयारी कर ली है। जल्द ही यात्रियों को यह सुविधा मिलने लगेगी।

रायपुर रेलवे स्टेशन से रोजाना 130 से अधिक ट्रेनें गुजरती हैं। अक्सर यात्रियों की शिकायत मिलती है कि रेलवे की खानपान सूची में यात्रियों को उनकी पसंद का नाश्ता और भोजन नहीं मिलता है। इस वजह से सफर के दौरान यात्रियों को परेशान होना पड़ता है। पिछले महीने ही रेलवे अधिकारियों व छत्तीसगढ़ के

सांसदों के साथ हुई बैठक में छत्तीसगढ़ी व्यंजनों को लंबी दूरी की ट्रेनों में उपलब्ध कराने की मांग उठी थी।

खानपान सेवा को बेहतर बनाने के लिए रेलवे बोर्ड ने सांसदों और यात्रियों की मांग के आधार पर छत्तीसगढ़ी व्यंजनों की सूची तैयार की है। अधिकारियों के मुताबिक जिन ट्रेनों में खानपान के पैसे टिकट में ही शामिल रहते हैं उनमें कीमत में बढ़ोत्तरी नहीं की जाएगी।सूची के आधार पर दिए जाने वाले खानपान एवं ब्रांडेड खाद्य पदार्थों की बिक्री की अनुमति रहेगी। इनके दाम एमआरपी से अधिक नहीं होंगे। वहीं सबसे अधिक बिकने वाले जनता भोजन के मूल्य में कोई बदलाव नहीं किया जायेगा। मधुमेह रोगियों एवं शिशु आहार भी मांग पर ट्रेन में ही उपलब्ध कराया जाएगा।

शिक्षा से रोजगार या संयोग से स्वरोजगार क्या है जरूरी?

हर व्यक्ति के जीवन में एक क्षण आता है, जब उसे दोराहे पर खड़ा होना पड़ता है- या तो वह परिस्थितियों को अपनी मजबूरी बना ले, या फिर उन्हीं परिस्थितियों से खुद को और मज़बूत करे। यह स्थिति खासकर युवाओं में अधिक देखने को मिलती है। लेकिन आज की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हमारी युवा पीढ़ी सफलता के लिए मेहनत करने से ज्यादा, बहाने बनाने और बाहरी दबावों में फंसने लगी है। मेरी यह लेख इसी संघर्ष और समाधान को समझने का प्रयास है।

समाज का दबाव और दिखावा

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की रिपोर्ट 'Education 4.0' यह बताती है कि भारत में शिक्षा का स्तर बढ़ा है, लेकिन 12वीं के बाद उच्च शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों की संख्या में कमी आई है। इसका बड़ा कारण समाज की दिखावटी सोच है। हम शिक्षा में निवेश करने के बजाय फिजूल के खर्चों में ज्यादा रुचि दिखाते हैं। माता-पिता अपने बच्चों की वास्तविक क्षमताओं को पहचानने के बजाय उन्हें केवल 'सफल' दिखने के लिए सामाजिक दबाव में ढकेल देते हैं। उनकी एकमात्र चाहत यही होती है कि उनका बच्चा सरकारी नौकरी प्राप्त करे, चाहे वह पद भृत्य या चौकीदार ही क्यों न हो! आपको जानकर हैरानी होगा कि विश्व की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक यूपीएससी के प्रशासनिक पद जैसे आईएएस-आईपीएस में चयनित उम्मीदवारों से जब यह पूछा जाता है, क्या इस पद को पाकर आप खुश हैं? तो कुछ लोगों का यह भी बयान सामने आया है कि वे केवल समाज के दबाव और समाज में परिवार के सम्मान को बढ़ाने के लिए इस पद का चुनाव किया।

इंटरनेट का असर और युवाओं की सोच

आज, इंटरनेट ने हमारे जीवन को

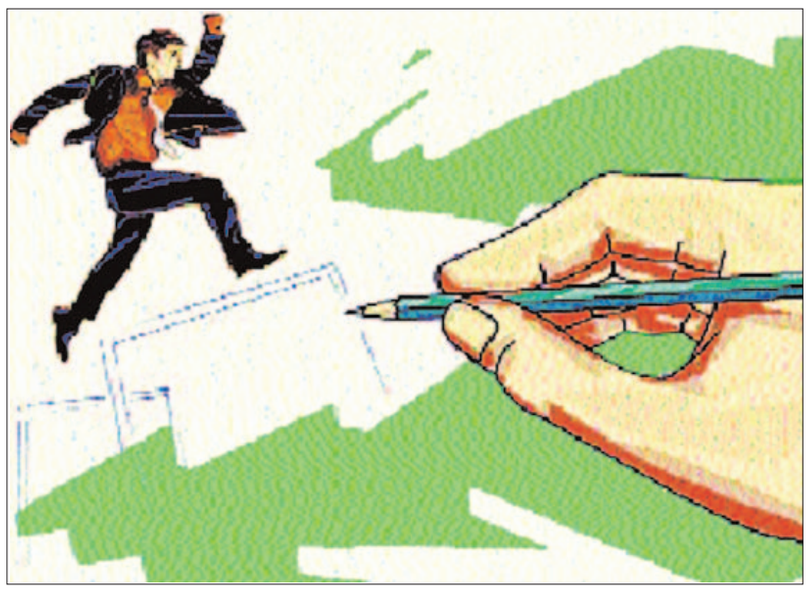

बहुत आसान और सुविधाजनक बना दिया है, लेकिन इसके साथ ही यह युवाओं की सोच को भ्रमित भी कर रहा है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में अधिकतर युवा यह सोचकर फंस जाते हैं कि एक बड़ी नौकरी ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। लेकिन यह मानसिकता बेहद सीमित है। वे अपनी रूचि व क्षमताओं को पहचाने बिना छोटे और बड़े काम की तुलना रुपयों (सैलरी) से करने लगते है। असल में, जो काम आपके आत्म-सम्मान और आत्म-निर्भरता को बढ़ाए, वही सबसे बड़ा है। चाहे वह स्वरोजगार हो या किसी क्षेत्र में विशेषज्ञता, दोनों ही समाज में आपका योगदान बढ़ाते हैं। सफलता में रुकावट डालने वाले कारक अक्सर हमारे चेतन और अवचेतन मन में बसे होते हैं।

चेतन कारक

1. **आलस**-आलस वह दुश्मन है, जो व्यक्ति को उसके लक्ष्यों से दूर कर देता है।
2. **समय प्रबंधन की कमी**- सही समय पर काम न करना और समय का बेहतर प्रबंधन न कर पाना बड़ी रुकावट है।
3. **योजनाओं की कमी**- अगर लक्ष्य स्पष्ट नहीं है, तो कोई भी प्रयास सफल नहीं हो सकता।
4. **बाहरी दबाव**-समाज, परिवार और दोस्तों का दबाव भी युवाओं के निर्णय लेने की क्षमता पर भारी पड़ता है।

अवचेतन कारक

1. **आत्म-संदेह**-जब किसी को खुद पर ही विश्वास नहीं होता, तो सफलता कैसे मिल सकती है?
2. **असफलता का डर**-विफलता के डर से लोग कोशिश करने से ही डरते हैं।
3. **पुराने अनुभव**- पुराने नकारात्मक अनुभव भविष्य की सफलता पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
4. **सीमित विश्वास**- जब आप अपनी क्षमता पर ही भरोसा नहीं करते, तो आप कभी भी अपनी पूरी क्षमता से काम नहीं कर पाते।

युवाओं को इन बाधाओं को समझकर उन्हें दूर करने की आवश्यकता है। शैक्षिक शिक्षा के साथ-साथ अन्य कौशलों को विकसित करना भी बेहद जरूरी है। जैसे- नृत्य, संगीत, चित्रकला, नई भाषाएँ या पारंपरिक भारतीय शैलियों में दक्षता हासिल करना। यह न केवल व्यक्तित्व को निखारता है, बल्कि रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर भी प्रदान करता है। अक्सर माता-पिता सरकारी नौकरी को ही अंतिम सफलता मानते हैं, लेकिन यह विचारधारा अब बदलने का समय है। स्वरोजगार और उद्यमिता युवाओं के लिए एक बड़ा अवसर है। अगर हम स्वरोजगार की दिशा में युवाओं को प्रेरित कर सकें, तो न केवल उनका, बल्कि पूरे देश का भविष्य उज्जवल होगा।

अपने भविष्य का निर्माण खुद करें

आज, भारत के युवाओं के पास वह ताकत है जो देश के भविष्य को बदल सकती है। उन्हें यह समझना होगा कि सफलता का कोई एक मापदंड नहीं है। चाहे वह शिक्षा हो, स्वरोजगार हो, या कला और संस्कृति में नई ऊंचाइयां छूने की बात हो, हर रास्ता सही है- बशर्ते कि आप उसमें अपनी पूरी ताकत और जुनून लगा सकें। याद रखें, असली सफलता वह होती है, जो आपके दिल को संतुष्टि दे, न कि समाज को। मजबूरी को मजबूती में बदलने का यही सबसे सही समय है।

रवि कुमार माँझी
(अबु धाबी, संयुक्त अरब अमीरात)

डॉ सलीम राज बने छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष

रायपुर (लाईफ वर्सिटी)। छत्तीसगढ़ राज्य वक्फ बोर्ड के बैठक में बोर्ड के सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से डॉ. सलीम राज को राज्य वक्फ बोर्ड का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया।

राज्य वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम राज ने कहा कि वक्फ बोर्ड अपने उद्देश्यों के अनुरूप काम करें। इसके लिए मुतवल्लियों से चर्चा कर वक्फ बोर्ड की योजनाओं का सफल क्रियान्वयन, भू-माफियाओं एवं अतिक्रमणकारियों से वक्फ सम्पत्तियों को सुरक्षित करने के साथ ही वक्फ की योजनाओं का सीधा लाभ सामाजिक एवं कमजोर वर्ग के शैक्षणिक विकास के लिए किया जाएगा।

डॉ. सलीम राज ने राज्य वक्फ बोर्ड का अध्यक्ष बनने पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय एवं पिछड़ा वर्ग अल्पसंख्यक विकास मंत्री रामविचार नेताम का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर राज्य वक्फ बोर्ड के सदस्यगण, मुतवल्ली एवं मुस्लिम समाज के गणमान्य नागरिकों ने डॉ. सलीम राज को बधाई और शुभकामनाएं दी।

चुनौती पूर्ण जिम्मेदारी मिली है. पार्टी और सदस्यों ने जो मुझ पर विश्वास जताया है उस पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करूँगा. मैं ऐसा कार्य करना चाहूँगा जिससे कौम का भला हो और पार्टी का भी नाम हो.

भू-अभिलेखों के डिजिटाईजेशन का मिल रहा लोगों को सीधा फायदा

रायपुर। भूमि संबंधी सभी रिकार्ड्स के डिजिटाईजेशन से लोगों को अपनी जमीन से जुड़ी जानकारियां रियल-टाइम पर उपलब्ध हो रही है। इस जानकारी को मोबाइल से कही से भी और किसी भी वक्त इंटरनेट के माध्यम से देखा जा सकता है। भूमि संबंधी रिकार्ड के डिजिटाईजेशन और इसके प्रबंधन से भूमि संबंधी जानकारी अब लोगों की आसान पहुंच में है। लोगों को भूमि संबंधी अभिलेख प्राप्त करने के लिए शासकीय कार्यालयों के चक्कर नहीं काटने पड़ रहे है।

राम, लक्ष्मण, हनुमान बन छत्तीसगढ़ से बुराई को खत्म करने संकल्पित हों : साय

रायपुर (लाईफ वर्सिटी)। दशहरे के दिन भारत के सभी राज्यों सहित छत्तीसगढ़ में भी बुराई का प्रतीक रावण के पुतले का दहन हुआ। रायपुर के डब्ल्यूआरएस मैदान में 101 फीट ऊंचे पुतले का दहन प्रदेश के मुख्यमंत्री साय की मौजूदगी में हुआ। इसके बाद वो रावणभाठा मैदान में भी पहुंचे जहाँ उन्होंने 50 लाख रुपए आयोजन के लिए देने की घोषणा की। **रायपुर उत्तर के विधायक पुरंदर मिश्रा ने नक्सलियों को रावण का भाई बताया और सीएम विष्णु देव से इनके खात्मे का आह्वान किया । मुख्यमंत्री विष्णु देव ने कहा कि सभी राम, लक्ष्मण, हनुमान बनाकर छत्तीसगढ़ में जो भी बुराई है उसे और अपने भीतर मौजूद बुराई को खत्म करने का संकल्प लें।**

इसके अलावा प्रदेश मे बिलासपुर के पुलिस ग्राउंड, अंबिकापुर के पीजी कॉलेज ग्राउंड, रायगढ़ के रामलीला मैदान समेत प्रदेश के कई जगहों पर भव्य आयोजन हुआ। कोरबा के लाल मैदान में 110 फीट ऊंचे रावण का दहन हुआ , बिलासपुर के साइंस कॉलेज मैदान में निकाला गया विजय जुलूस । रायगढ़ में ओपी चौधरी ने रावण के पुतले का दहन किया ।

इन सबसे अलग चर्चा रही रायपुर एम्स के डायरेक्टर की आरएसएस के मंच पर रहने की . भारतीय सेना के रिटायर अफसर और रायपुर एम्स के डायरेक्टर लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल को टाटीबंध के बाजार मैदान में दशहरा पर आयोजित संघ की सभा में उन्हें बतौर प्रमुख अतिथि बुलाया गया था।

दुर्बल रहना अपराध- मोहन भागवत

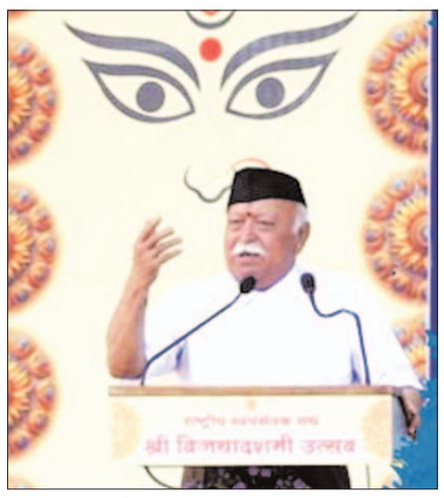

नागपुर स्थित मुख्यालय में संघ प्रमुख मोहन भागवत का दिया भाषण इस समय राजनीतिक गलियारों में चर्चा में है.

ऐसा इसलिए क्योंकि उन्होंने बांग्लादेश की राजनीतिक अस्थिरता की तुलना भारत से की है. भाषण में मोहन भागवत ने 'बांग्लादेश में हिंसा जैसी स्थिति भारत में पैदा करने की कोशिश', 'बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर अत्याचार' और 'आरजी कर मेडिकल कॉलेज में महिला डॉक्टर पर अत्याचार' के मुद्दे पर टिप्पणी की. भारत में बांग्लादेश जैसे हालात पैदा करने की कोशिश हो रही है. 'डीप स्टेट', 'वोकिज्म', 'कल्चरल मार्क्सिस्ट' शब्द इस समय चर्चा में हैं और ये सभी सांस्कृतिक परंपराओं के घोषित दुश्मन हैं. समाज में अन्याय की भावना पैदा होती है. असंतोष को हवा देकर उस तत्व को समाज के अन्य तत्वों से अलग और व्यवस्था के प्रति आक्रामक बना दिया जाता है.

उन्होंने कहा कि भारत के खिलाफ 'मंत्र विप्लव' हो रहा है। उन्होंने कहा कि समाज की विविधताओं को अलगाव में बदलकर टकराव की स्थिति पैदा करना, सत्ता, प्रशासन, कानून, संस्था सबके प्रति अनादर का व्यवहार सिखाना... इससे उस देश पर बाहर से वर्चस्व चलाना आसान हो जाता है और इसे मंत्र विप्लव कहते हैं। उन्होंने अपील की कि इसे लेकर सचेत रहें।

आकर्षण का केंद्र बना 4 साल का स्वयंसेवक

संघ ने रायपुर में शनिवार को पथ संचलन (मार्चा पास्ट) किया। हाथों में डंडे लेकर स्वयं सेवक चलते नजर आए। इनमें सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद्र रहा 4 साल का एक छोटा बच्चा जो शस्त्र पूजा में तलवार लिए नजर आया। देवेंद्र पटेल नाम के युवक के साथ पहुंचे इस बच्चे का नाम चित्रांश पटेल है। जो पथ संचलन में भी पूरे जोश में घूमता नजर आया। अपने आस-पास बड़ों को देखकर वैसे एक्टिविटी कर रहा था। टाटीबंध में आयोजित सभा में विजयादशमी उत्सव के मुख्य वक्ता मध्य क्षेत्र संघचालक डॉ पूर्णेंदु सक्सेना ने संघ की योजनाओं के बारे में बताया । उन्होंने कहा कि संघ की स्थापना सन 1925 में हुई। अब संघ 100 साल में प्रवेश कर रहा है। हमें सामाजिक जीवन में मन कर्म वचन से ऐसा कोई भी कार्य जिससे किसी को नुकसान हो, जरूरतमंद को सहयोग करें , प्रदूषण ना फैलाना, प्रशासन के नियमों का पालन करना, अपनी कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारी का निष्ठापूर्वक निर्वहन करना, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भष्टाचरण का परित्याग करना आदि। बातों का पालन करना होगा और समाज में अन्य लोगों को भी बताना होगा।

रावण दहन कार्यक्रम में स्वागत और सम्मान नहीं होने से स्वास्थ्य मंत्री नाराज हुए

चिरमिरी मे राज्य के राज्य के स्वास्थ्य मंत्री की नारजगी भी देखने को मिली जब मंत्री और स्थानीय विधायक श्याम बिहार जयसवाल महात्मा गाँधी स्टेडियम मे हो रहे रावण दहन कार्यक्रम मे पहुंचे लेकिन उनका स्वागत और सम्मान करने वाला कोई नहीं था । खास बात तो यह भी थी की आमंत्रण पत्र पर स्वास्थ्य मंत्री का नाम भी अंकित नहीं था । मंत्री की नारजगी लाजिमी थी एसईसीएल के जीएम द्वारा प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री की अनदेखी से नाराज श्यामबिहारी जायसवाल कार्यक्रम से दूरी बनाते हुए कार मे बैठकर चले गए हालांकि कोल इंडिया के अधिकारी हाथ जोड़ मिन्नते करते रहे लेकिन स्वास्थ्य मंत्री का दिल नहीं पसीजा ।

विष्णु के सुशासन में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार को लेकर एक और बड़ा कदम

राज्य के चार नवीन मेडिकल कालेज भवन निर्माण के लिए 1020 करोड़ रूपए का ई-टेंडर जारी

24 माह में पूरा होगा निर्माण कार्य, सीजीएमएससी होगी निर्माण एजेंसी

हम जो कहते हैं, उसे कर के दिखाते हैः श्याम बिहारी जायसवाल

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय राज्य की तरक्की के लिए कृतसंकल्पित हैं। तरक्की और सुशासन का ये सफर स्वास्थ्य सुविधाओं में विकास के बिना अधूरा है। इस बात का विशेष ध्यान रखते हुए मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के साथ मिलकर स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार और नई सुविधाओं के विकास पर विशेष जोर दिया है। इसी बात के मद्देनजर मुख्यमंत्री श्री साय की पहल और और स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के मार्गदर्शन में राज्य के चार नवीन मेडिकल कालेजों के भवन के लिए निविदा जारी कर दी गयी है।

राज्य में जांजगीर चांपा, कबीरधाम, मनेंद्रगढ़ और दंतेवाड़ा के गीदम में चार नवीन मेडिकल कालेज बनेंगे। इनकी प्लानिंग, डिजाइनिंग, इंजीनियरिंग और निर्माण कार्य के लिए 1020.60 करोड़ रूपए का प्रावधान रखा गया है। 11 अक्टूबर से बिड डाक्यूमेंट आनलाइन उपलब्ध होंगे तथा इन्हें जमा करने की अंतिम तारीख 7 नवंबर होगी।

चार नवीन मेडिकल कालेजों के लिए ई टेंडर जारी होने के बाद स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में हम जो कहते हैं उसे कर के भी दिखाते हैं। श्री जायसवाल ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार ने नवीन मेडिकल कालेज की स्थापना करने की घोषणा तो की, लेकिन उसके निर्माण और संचालन को लेकर कोई पहल नहीं की। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार कभी भी विकास की पक्षधर नहीं रही है और सिर्फ खोखले वायदों पर काम करना जानती है। लेकिन प्रदेश के युवाओं के हित में विष्णु के सुशासन में हमारी सरकार लगातार काम कर रही है और अपने वायदों को पूरा कर रही है। वित्त मंत्री श्री ओपी चौधरी ने बजट में इन मेडिकलव कालेजों के लिए बजट देने की बात कही थी और उन्होंने इसके लिए 1020.60 करोड़ रूपए की राशि को स्वीकृत भी किया है। श्री जायसवाल ने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री होने के नाते उनकी पहली प्राथमिकता प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं का इजाफा करना है ताकि राज्य के युवाओं के साथ ही प्रत्येक वर्ग के लोगों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके और स्थानीय लोगों को बेहतर इलाज उपलब्ध हो सके।

छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स ने रतन टाटा को दी श्रद्धांजलि

रायपुर। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जगी, विक्रम सिंहदेव,राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि चेम्बर कार्यालय चो.देवीलाल व्यापार उद्योग भवन बाम्बे मार्केट, रायपुर में देश के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रतन टाटा जी के निधन पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर चेम्बर पदाधिकारियों, कार्यकरिणी सदस्यों एवं विभिन्न व्यापारिक संघों के प्रतिनिधियों द्वारा श्री रतन टाटा जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई,चेंबर प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी जी ने देश के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रतन टाटा के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय उद्योग जगत के महानायक श्री रतन टाटा का निधन देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है, उन्होंने न सिर्फ टाटा समूह को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया, बल्कि भारतीय उद्योग को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा दिलाई। उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने कई ऐतिहासिक अधिग्रहण किए और समाज कल्याण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे एक सफल उद्योगपति होने के साथ-साथ समाजसेवक भी थे। रतन टाटा जी की विरासत हमेशा प्रेरणादायक रहेगी, और उनका इस संसार से अलविदा होना देश को गहरे शोक में डाल दिया है,अमर पारवानी ने आगे कहा कि व्यापार एवं उद्योग जगत में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें सदैव याद किया जाता रहेगा

ईलाज के लिए कंधो का सहारा, 10 किमी चलने के बाद मिलती है एम्बुलेंस

जगदलपुर। बस्तर जिले का हेल्थ सिस्टम अभी भी कंधो के सहारे चल रहा है. गांव-देहात तक सड़क नहीं होने की वजह से लोग को बीमार लोगों को कंधे पर लादकर 10 किमी तक चलते है, तब उन्हें एंबुलेंस की सेवा मिल पाती है.मामला दरभा ब्लॉक का है, जहां एलंगनार इलाके के आश्रित गांव कनकापाल के मालापारा तक सड़क न होने के कारण बीमार शख्स को इलाज के लिए कंधे पर ढोकर 10 किमी दूर खोटापदर गांव तक ले जाना

पड़ता है, जहां से अस्पताल ले जाने के लिए एंबुलेंस सेवा उपलब्ध होती है.

हाल ही में गांव के चैतू राम नाग को उल्टी-दस्त के साथ बुखार ने जकड़ लिया. ऐसे में परिवार वालों के कंधे पर ढोकर ले जाने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है. इसी तरह कनकापाल के पदरपारा में एक और मरीज कंधे पर ढोकर तोंगपाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया.ताजा घटनाक्रम पर सीएमएचओ संजय बसाक ने बताया कि हमने एंबुलेंस उपलब्ध करा दिया था, लेकिन रास्ता नहीं होने के कारण गांव नहीं पहुंच पाया. फिलहाल, युवक का अस्तपाल में उपचार किया जा रहा है.

कैनाल रोड पर ग्रिल काटकर दुकानें सजाई

जोन 10 में ग्रिल काटकर उसको बनाया अपने घरों का गेट, कैनाल रोड पर रोज लगता है जाम

रायपुर। राजधानी रायपुर में हर सड़क पर अवैध कब्जे आम लोगों के लिए आफत बने हुए हैं लेकिन जिला प्रशासन और नगर निगम का भारी भरकम अमला अपनी जिम्मेदारी से भाग रहा है, इन्हें जन समस्याओं से कोई सरोकार ही नहीं है।

पिछले विधान सभा चुनाव में राजधानी को गड्ढों से बदहाल सड़कें, सडकों पर अवैध कब्जे, शहर में सफाई की बदतर स्थिति और लचर कानून व्यवस्था से त्रस्त रायपुर की जनता ने कांग्रेस के तीन विधायकों को सबक सिखाते हुए सभी राजनितिक दलों को यह सन्देश दिया कि नेता कोई भी हो जो निष्क्रिय रहेगा उसे जनता घर पर बिठा देगी। पिछले 7 माह से वही गलतियाँ सत्तारूढ़ भाजपा कर रही है ऐसा लग रहा है जीत का अहंकार अभी से दिमाग में चढ़ गया है, वे भूलें नहीं लोक सभा चुनाव में जनता ने नरेंद्र मोदी को प्रधान मंत्री बनाने के लिए वोट कर भाजपा को जिताया जरुर है लेकिन आगामी नगर निगम चुनावों में प्रदेश की भाजपा सरकार फिर से कसौटी पर होगी क्योंकि प्रदेश के नगरीय निकायों में कोई भी काबिज हो, जनता ने भाजपा को अधिक जिम्मेदार मानते हुए प्रदेश सरकार में बिठाया है। असंतोष की शुरुआत हो चुकी है अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है।

बहरहाल आज बात कैनाल रोड की हो रही है, रोड निर्माण के दौरान ही सड़क के दोनों ओर ग्रिल लगाकर प्रवेश को प्रतिबंधित किया गया था, स्मरण रहे कि सड़क बनने से पूर्व यह नहर थी इसलिए स्वाभाविक रूप से सड़क निर्माण से पूर्व इस सड़क पर बने वैध अवैध सभी निर्माणों के दरवाजे सड़क की ओर न होकर पीछे की ओर थे लेकिन मुख्य सड़क से जुड़ने की लालच में ग्रिल काटकर इस सड़क पर गलियों को जोड़ा जा रहा है, कहीं कहीं पर स्थानीय पार्षद वोटों की लालच में इन्हें समर्थन देकर भड़का रहे हैं, कुछ वैध अवैध निर्माण को दुकानों में तब्दील किया जा रहा है, लालपुर चौक से राजेन्द्र नगर थाने के बीच कुछ दुकानें धड़ल्ले से बन रही है, कुछ ने तो ग्रिल को काटकर उसे ही अपने घर दुकान का गेट बना दिया है, एक ऑटो रिपेयरिंग शॉप ने तो बाकायदा सड़क पर दोपहिया खड़ी करवाकर सड़क पर ही रिपेयरिंग शुरू कर सड़क को आधा कर दिया हैद्ध यही नहीं वहां रहने वाले अपने डिलीवरी वाहन भी सड़क पर खड़े कर रहे हैं।

यह सड़क रोजाना शाम 5 से 8 बजे तक जाम हो जाती है, राजेन्द्र नगर थाने के सिपाही भी लाचार नज़र आते हैं लेकिन उनकी उदासीनता ही है कि वे सड़क पर खड़े किये जा रहे उन वाहनों को जब्त करने की कार्यवाही भी नहीं करते।

साइंस कॉलेज मैदान किनारे बने चौपाटी को हटाने का निर्देश

रायपुर। राजधानी रायपुर में भारी विवादों के बीच जीई रोड के किनारे साइंस कॉलेज मैदान के करीब 6 करोड़ की लागत से बनाए गए चौपाटी को हटाने की तैयारी है. विधायक राजेश मूणत ने रायपुर स्मार्ट सिटी परामर्शदात्री समिति की बैठक में इस संबंध में निर्देश दिए हैं. अब यहां पर छात्रों के लिए ओपन रीडिंग और बच्चों के प्ले जोन का निर्माण किया जाएगा.

दरअसल, चौपाटी हटाने 15 अक्टूबर को भाजपा पार्षदों के साथ निगम घेराव की विधायक राजेश मूणत ने चेतावनी दी थी. चेतावनी के बाद अन्य विभिन्न विषयों को लेकर रायपुर स्मार्ट सिटी परामर्शदात्री समिति की शुक्रवार को बैठक हुई, जिसमें बैठक में चौपाटी को हटाकर यूथ हब बनाने का फ़ैसला हुआ.

विधायक राजेश मूणत ने बताया कि तत्कालीन सरकार और नगर निगम ने गलत जानकारी के साथ प्रोजेक्ट को शुरू किया. स्मार्ट सिटी को काम शुरू करने से पहले ये चेक करना होता है कि ज़मीन उनकी है या नहीं. खुद के ज़मीन पर ही निर्माण और टेंडर किया जाता है. लेकिन ग़लत तरीके से काम किया गया है.

उन्होंने कहा कि रायपुर शहर के बीच में एजुकेशन हब है, विश्वविद्यालय, कॉलेज और लाइब्रेरी है. इनकी सरकार में कह रहे थे यूथ हब बन रहा, लेकिन यूथ हब के नाम पर कोई काम नहीं किया. विधानसभा में मुद्दा उठाया गया था. तथ्यों की जाँच कर जिम्मेदारों पर कार्रवाई का फ़ैसला हुआ है. चौपाटी की जगह अब यूथ एक्टिविटी के लिए प्रस्ताव दिया गया है.

कट रहा हसदेव.... खामोश... हम कुछ नहीं बोलेगा..

ये पेड़, ये जंगल, हमारी पहचान हैं।
देखो, कैसा हो रहा है इनका विनाश है.
ग्रामसभा की आवाज़, सिसकियों में रह गई ।
जज्बात कुचल गये आहे फ़िज़ा में घुल रही.
इस मिट्टी की गूंज फ़लक तक पहुंचेगी,
दर्द से भरी, ये ज़मीन भी एक दिन बोलेगी।
इंतज़ार जिस सुबह का, वो सुबह कब आएगी ।

हसदेव जंगल को लेकर एक बार फिर से तनाव की स्थिति हो गई है। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के उदयपुर विकासखंड के ग्राम साल्ही और आस-पास के अन्य ग्रामों के साथ-साथ सूरजपुर जिले के जनार्दनपुर में परसा कोल खदान परियोजना में पेड़ों की कटाई हो रही थी। जिसके विरोध में पुलिसकर्मी और ग्रामीण आमने सामने आ गए हैं। गुरुवार सुबह सैकड़ों पुलिसकर्मियों की मौजूदगी में इन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई का काम चल रहा था। पेड़ों की कटाई की जानकारी मिलते ही ग्रामीण और हसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति के सदस्य मौके पर पहुंचे और विरोध करने लगे।

16 अक्टूबर की सुबह से ही छत्तीसगढ़ पुलिस की सुरक्षा घेरे के साथ पूरा सरकारी तंत्र भारी मशीनों के साथ प्राकृतिक साल, चार, महुआ, बीजा आदि वर्षों पुराने हजारों पेड़ो को धराशाई करने लगा हुआ है ग्रामीण भी अपनी अंतिम सांस तक पुरखों की धरोहर और प्रकृति की इस अमूल्य देन को बचाने लगे हुए हैं। खबर मिली की मौजूद अधिकारियों से बातचीत के दौरान हसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति के सदस्यों ने पुलिस पर हमला कर दिया।

मौके पर मौजूद लोगों ने तीर-धनुष, गुलेल और पत्थर से हमला किया है। दो पुलिसकर्मियों को तीर लगने की भी जानकारी सामने आई है। परसा कोल ब्लॉक के लिए की जा रही कटाई का ग्रामीण लगातार विरोध कर रहे हैं। हमले के बाद परसा को पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया गया है।

जानकारी के अनुसार, एक पुलिसकर्मी को गंभीर रूप से चोट आई है जबकि कई लोग हमले में घायल बताए जा रहे हैं। इस घटना के बाद ग्रामीणों के बीच आक्रोश है। सूत्रों के अनुसार, लगभग 6000 पेड़ों की कटाई की जानी है। जिससे लगभग 140 हेक्टेयर जंगल का सफाया किया जाएगा ताकि परसा कोल ब्लॉक का काम शुरू हो सके।

बता दें जिस जंगल का विनाश किया जा रहा है वह हसदेव का ही हिस्सा है जिसे बचाने स्वयं छत्तीसगढ़ विधानसभा ने सर्वानुमति से संकल्प किया था। भारतीय वन्य जीव संस्थान ने चेतावनी दी थी कि यदि खनन की इजाजत दी गई तो मानव हाथी संघर्ष प्रदेश में विकराल हो जायेगा और छत्तीसगढ़ की पहली महिला दलित सांसद स्वर्गीय मिनीमाता के नाम पर बना बांध भी खत्म हो जायेगा जिससे किसानों की 6 लाख हेक्टेयर जमीन सिंचित होती है।

यहां की ग्रामसभाओं की भी कोई सहमति नहीं है । जिला कलेक्टर और अदानी कंपनी ने मिलकर ग्रामसभा के फर्जी, कूट रचित प्रस्ताव तैयार कर स्वीकृति हसिल की हैं जिसका खुलासा छत्तीसगढ़ राज्य अनुसूचित जन जाति आयोग की सुनवाई में हो गया. लेकिन रिपोर्ट आने से पहले ही सरकार ने भारी पुलिस बल भेजकर जंगलों की कटाई शुरू करवा दी है।

सरकार समार्थित लोगो का कहना है की अडानी ग्रुप का छत्तीसगढ़ में उद्योग ही नहीं कर रहा,बल्कि वहाँ के स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने के लिए, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के नए अवसरों के साथ, ये परियोजनाएं स्थानीय विकास को बढ़ावा दे रही हैं।

छत्तीसगढ़ बचाओ आंदोलन (सीबीए) हसदेव क्षेत्र में कोयला खदानों के आवंटन के खिलाफ लगातार विरोध प्रदर्शन कर रहा है, संगठन ने पुलिस की कार्रवाई की निंदा की। सीबीए के संयोजक आलोक शुक्ला ने कहा कि सीबीए राजस्थान को कोयले की आपूर्ति करने और अदाणी के कारोबार का विस्तार करने के लिए हसदेव जंगल में एक नई खदान, परसा कोयला ब्लॉक को जबरदस्ती खोलने के लिए निहत्थे ग्रामीणों पर लाठीचार्ज और दमनकारी कार्रवाई की कड़ी निंदा करता है।

जिस तरह से हसदेव को लेकर पक्ष और विपक्ष दोनों ने ही चुप्पी साध रखी है, मानों मानवों में जंगल के प्रति प्रेम बचा ही नहीं जबकि राज्य के दोनों प्रमुख पार्टियों में सांसद और विधायक का बाहुल्य है. फिर भी आज हसदेव के जंगलों की चीखों को सुनने वाला कोई नही , वहां के आदिवासियों की आहें हवाओं में घुल रही हैं। पेड़ों की कटाई पर उनके जज़्बातों को कुचला जा रहा है, और मुनाफे की दौड़ में उनके हक़ की आवाज़ दब रही है। अफ़सोस, सब खामोश है, जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

रायपुर, दुर्ग स्टेशनों का अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत हो रहा कायाकल्प

रायपुर। रेल मंत्रालय के महत्वाकांक्षी परियोजना के अंतर्गत यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधा प्रदान करने हेतु 'अमृत भारत स्टेशन' योजना के अंतर्गत स्टेशनों का कायाकल्प किया जा रहा है । इस योजना के अंतर्गत दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर मंडल के 15 स्टेशनों का अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत कायाकल्प किया जा रहा है । (1) भाटापारा, (2) भिलाई पावर हाउस, (3) तिल्दा-नेवरा, (4) बिल्हा, (5) भिलाई, (6) बालोद, (7) दल्ली राजहरा, (8) भानुप्रतापपुर, (9) हथबंद, (10) सरोना, (11) मरोदा, (12) मंदिर हसौद, (13) उरकुरा, (14) निपनिया, (15) भिलाई नगर, साथ ही रायपुर, दुर्ग स्टेशनों

लगभग 482.48 करोड़ राशि के बजट से मेजर रिडेवलपमेंट किया जा रहा हैं। इन योजनाओ का मकसद आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता के साथ मौजूदा सुविधाओं के अपग्रेडेशन पर भी काम करना है । चरणबद्ध तरीके से इन कार्यों को पूर्ण किया जाएगा।

रायपुर स्टेशन को यात्रियों के अनुकूल सर्वसुविधायुक्त बनाने हेतु भव्य प्रवेश एवं विकास द्वार, यात्रियों के आवागमन एवं निकास के लिए सुगम पथ ,10 टिकट बुकिंग विंडो, बेहतरीन प्लेटफार्म सरफेस, 300 किलोवाट पावर सोलर सोलर पैनल युक्त ऊर्जा संरक्षण, प्रत्येक प्लेटफार्म पर 26 कोच इंडिकेशन बोर्ड, 74 टॉयलेट, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, 6 मीटर चौड़े तीन फुट ओवर ब्रिज 40 वाटर कूलर 42 लिफ्ट, 3512 स्क्वायर मीटर पार्सल एरिया, 12075 स्क्वायर मीटर प्लेटफार्म शेल्टर, 10 यात्री आरक्षण सुविधा काउंटर, 16 एस्केलेटर लगाए जाने हैं। रिजर्व लॉज, मल्टी मॉडल ट्रांसपोर्टेशन हब, कोनकोर्स एरिया, बस्तर छत्तीसगढ़ी आर्ट से सुसज्जित होगा रायपुर स्टेशन विश्व स्तरीय यात्री सुविधाओं से उन्नत होगा रायपुर स्टेशन। वर्तमान समय में रायपुर स्टेशन पर लगभग 50हजार यात्रियों का आवागमन होता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा आसमां पब्लिशर्स इंडिया प्रा.लि. जयराम काम्पलेक्स गली, मालवीय रोड, जयस्तंभ चौक रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979